RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. /261/ भोपाल / 2015-17 प्रकाशन तिथिः 22 जून 2015

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

जुलाई 2015

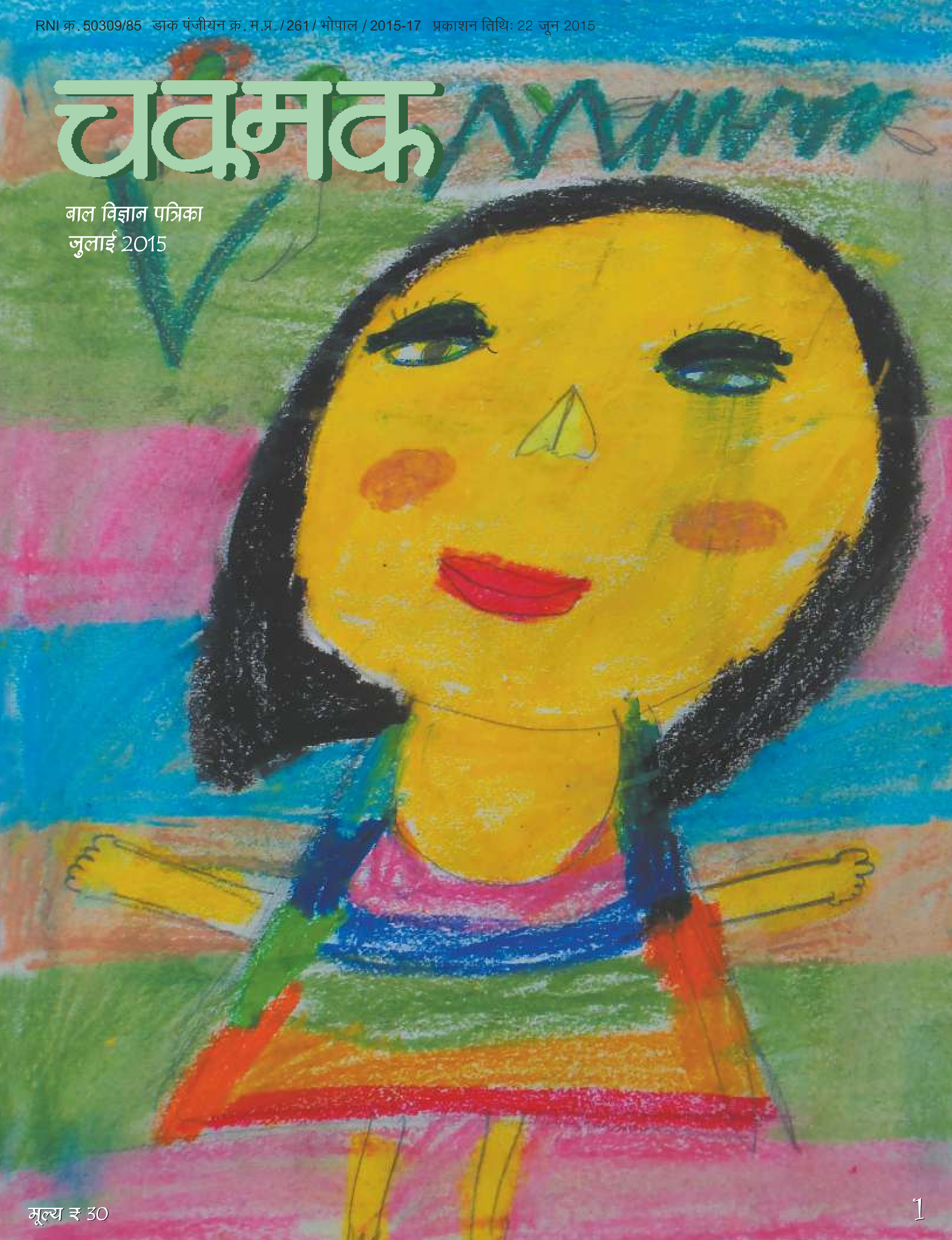

मूल्य ₹ 30

हमने पकाई है एक डायरी...
तुम्हारे लिए!

आकर्षक चित्रों से सजे-धजे डेढ़ सौ पन्ने

इसका नाम है - दुबली चींटी सबसे आगे थी...

यह डायरी बहुत ही दोस्ताना स्वभाव की है। तुम्हारे पास आते ही तुमसे बातें करेगी...रोज़-रोज़ तुम्हारे ही पड़ोस की नई-नई चीज़ों से, लोगों से मिलवाएगी। तुम्हारे साथ चाँद-तारे निहारेगी। तुम्हें चित्र बनाने के लिए नए-नए विषय सुझाएगी। कई बातें होंगी जो तुम अब तक किसी को नहीं बताते होगे...तुम इस डायरी से साझा कर सकते हो।

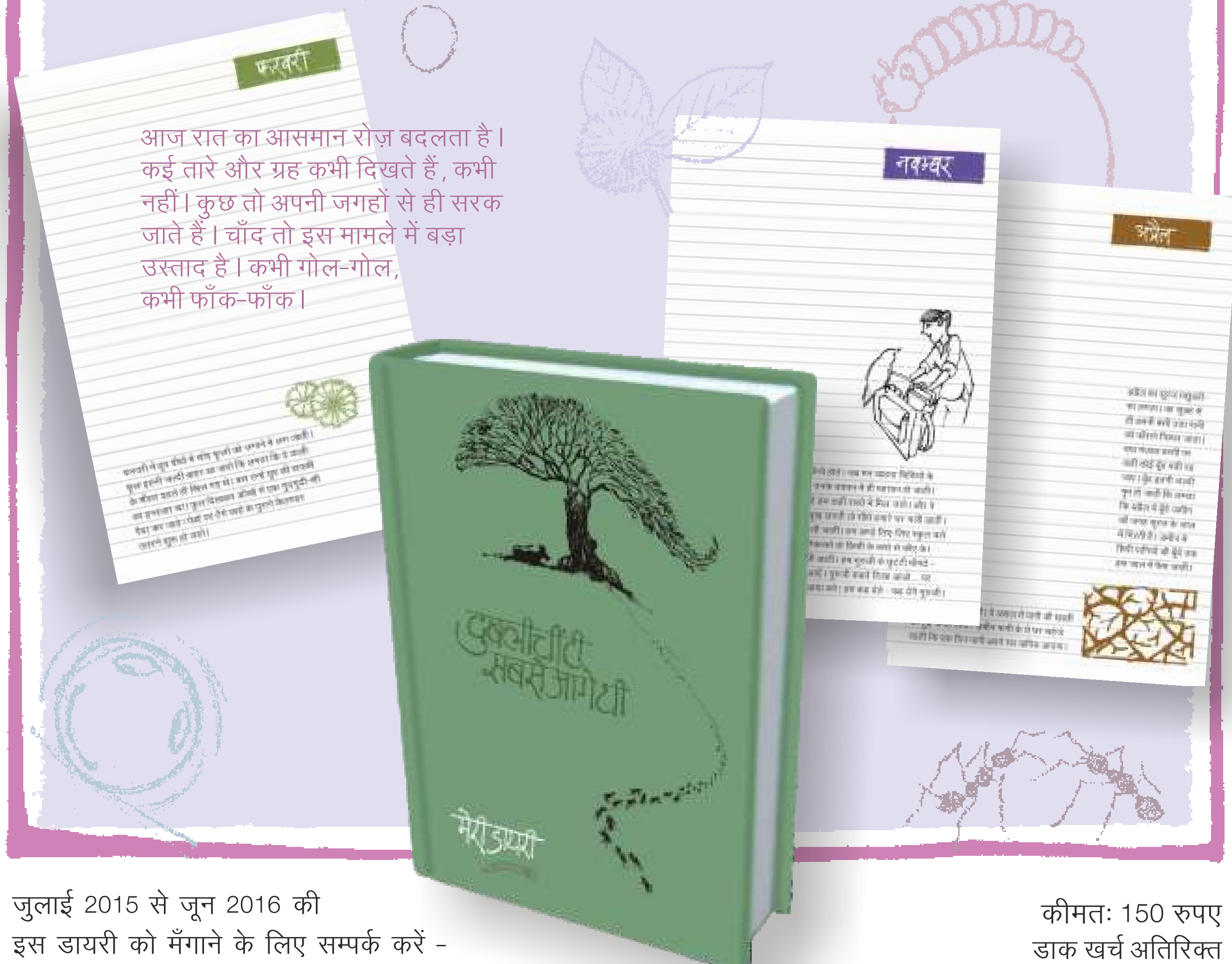

जुलाई 2015 से जून 2016 की
इस डायरी को मँगाने के लिए सम्पर्क करें -

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी
शिवाजी नगर, भोपाल - 462016 (म.प्र.)
फोन - 09425010115, 0755 - 2671017, 4252927, 9425010115
email - chakmak@eklavya.in, pitara@eklavya.in   www.chakmak.eklavya.in www.eklavya.in

कीमतः 150 रुपए
डाक खर्च अतिरिक्त
10 से अधिक प्रतियों का डाक खर्च हम देंगे
भुगतान एकलव्य के नाम से बने चैक/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट द्वारा भेजें।
भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

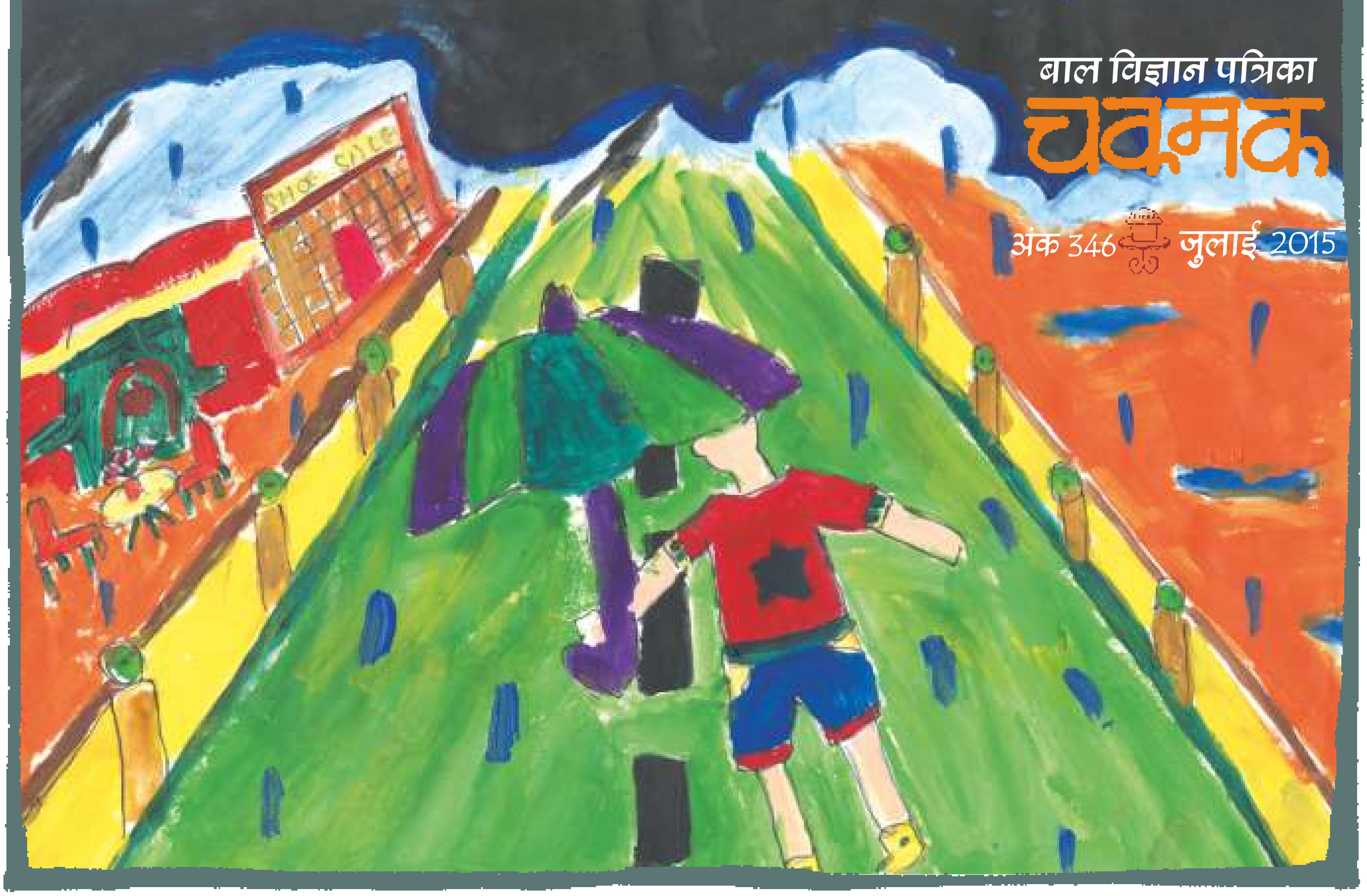

– सृष्टि मित्तल, पाँचवीं, लुधियाना

इस अंक में

4 ड्रैगनफ्लाई सोलह हज़ार ... - विनता विश्वनाथन

7 मुझे धूप से डर लगता है... - प्रियंवद

8 लघु कथाएँ - मण्टो, टोनी दि मैलो

10 बाघ आ रहा है, डव्वल वास्ता... - मधुकर रामटेके

13, 18,19 मेरा पन्ना

14 काँच ठोस है या द्रव - सुशील जोशी

17 पत्र - असगर वजाहत

20 हाजी-नाजी

21 बोली रंगोली

24 दोस्त - शशिकिरण

28 घोंसले पर डाका - संजय भारती

31 अनवर मियाँ की रोटी - दामोदर अग्रवाल

32 थर्टी मीटर टेलिस्कोप - विवेक सोले

35 पिछले माह की पहेली का हल

36 मगरमच्छों का बसेरा - जसबीर भुल्लर

39 माथापच्ची

40 फनी पाठशाला - इरफान

42 डाकू - हेमराज हल्दुनिया

43 चित्रपहेली - कविता तिवारी

44 उधड़ के तागा-तागा बादल बरस गया..

आवरण चित्र

आद्या जोशी (6 साल, भोपाल) ने इस चित्र को मोनालिसा नाम दिया है।

सम्पादन
सुशील शुक्ल
शशि सबलोक

सहायक सम्पादक
कविता तिवारी
मिताली अहीर

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी

डिज़ाइन
दिलीप चिंचालकर

वितरण
झनकराम साहू

सहयोग
वरुण ग्रोवर
प्रभात
मिहिर
कमलेश यादव

एक प्रति :	30.00	-	व्यक्तिगत
	50.00	-	संस्थागत
वार्षिक :	300.00	-	व्यक्तिगत
	500.00	-	संस्थागत
तीन साल :	800.00	-	व्यक्तिगत
	1350.00	-	संस्थागत
आजीवन :	4000.00	-	व्यक्तिगत
	6000.00	-	संस्थागत

विप्रो एप्लाइंग थॉट इन स्कूल्स के वित्तीय सहयोग से विकसित

सभी डाक खर्च हम देंगे।
चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चैक से भेज सकते हैं। भोपाल के बाहर के चैक में 80.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी, शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016, फोन: (0755) 4252927, 2550976, 2671017
फैक्स: (0755) 2551108, e mail - chakmak@eklavya.in, e mail - circulation@eklavya.in, www.chakmak.eklavya.in, www.eklavya.in

ड्रैगनफ्लाई का सोलह हज़ार किलोमीटर का प्रवास

विनता विश्वनाथन

चार्ल्स एण्डर्सन एक समुद्रीय जीववैज्ञानिक (मरीन बायोलॉजिस्ट) हैं। वे हिन्द महासागर-अरब सागर में स्थित माले द्वीप पर 1983 से रह रहे हैं। माले मालदीव द्वीप समूह की राजधानी है और केरल से कोई 600 किलोमीटर दूर दक्षिण-पश्चिम दिशा में है। मालदीव कोरल रीफ (मूँगा चट्टानों) से बने द्वीप हैं। चार्ल्स एण्डर्सन को कोरल रीफ में मछलियों और व्हेल के पीछे समुद्र में तैरना बड़ा दिलचस्प लगता था। एक प्रकृतिविद होने के नाते आसपास के अन्य जीव-जन्तुओं पर ध्यान देने की भी उनकी आदत थी।

अपनी पढ़ाई खत्म करके जब वे माले में रहने लगे तो उन्होंने गौर किया कि साल के कुछ खास महीनों में आसमान ड्रैगनफ्लाई (जिन्हें हम हैलिकॉप्टर नाम से ज़्यादा जानते हैं) से भर जाता था। हज़ारों ड्रैगनफ्लाई की लहरें-सी आतीं। हर जत्था दो-चार दिन रुकता और फिर चल देता। कीटों में अकसर ऐसा होता है कि एक प्रजाति के सारे सदस्य एक ही समय पर बच्चे पैदा करते हैं और फिर कुछ दिनों के लिए हमें सिर्फ उसी प्रजाति के कीड़े दिखते हैं – जब तक नई पीढ़ी अण्डे देकर मर नहीं जाती। लेकिन ड्रैगनफ्लाई की प्रजातियाँ मीठे पानी के नदी-नाले, बावड़ी-पोखरों में अण्डे देती हैं। माले में बरसात का सारा पानी ज़मीन सोख लेती है। 5.8 वर्ग किलोमीटर में न कोई नदी है, न तालाब, न कोई नाला – बरसात का पानी न कहीं रुकता है, न ही कहीं बहता पानी है। माले में ही नहीं, मालदीव के किसी भी द्वीप पर सतही मीठा पानी नहीं है (माले में एक फैक्ट्री है जिसमें समुद्र के पानी से मीठा पानी बनता है)। इससे एण्डर्सन को इतना तो पता चला कि ड्रैगनफ्लाई प्रजनन के लिए तो मालदीव नहीं आते हैं। तो फिर क्यों आते थे? उनको पता था कि ये कीट प्रवासी होते हैं, तो शायद माले उनके प्रवास के रास्ते में पड़ता होगा। लेकिन चारों ओर मीलों तक फैला समुद्र और सबसे पास पूर्व में भारत-श्रीलंका और पश्चिम में सैशल्स-अफ्रीका था।

चित्रः श्यामल

अफ्रीका

सैशल्स

1996 से चार्ल्स एण्डर्सन उन तारीखों को नोट करने लगे जब माले में उनको ड्रैगनफ्लाई के विशाल झुण्ड दिखते थे। साथ में उन्होंने भारत में, खासकर दक्षिण भारत में अपने कुछ दोस्त-परिचितों से भी उन तारीखों को नोट करने को कहा जब वे ड्रैगनफ्लाई के झुण्डों को देखते हैं। ये वे ड्रैगनफ्लाई थे जो भारत में सितम्बर-अक्टूबर में दक्षिण की तरफ प्रवास करते हैं। फिर सैशल्स और दक्षिण और पूर्वी अफ्रीका से भी उन्होंने ऐसी जानकारी हासिल की। कई सालों तक इकट्ठा किए इन आँकड़ों को उन्होंने मानचित्र पर प्लॉट (दर्ज) किया। चार्ल्स एण्डर्सन को अब एक क्रम दिखने लगा था – ड्रैगनफ्लाई के विशाल झुण्ड सबसे पहले सितम्बर-अक्टूबर में भारत में दिखते हैं। फिर भारत के दक्षिण तट पर, फिर उत्तर मालदीव और उसके बाद दिसम्बर तक माले में दिखने लगते हैं। इसके कुछ दिनों बाद ये सैशल्स और फिर अफ्रीका के पूर्वी देशों जैसे तन्ज़ानिया और केन्या में दिखाई देते हैं। इसके कुछ हफ्तों बाद ये कीट अफ्रीका के दक्षिण क्षेत्रों में दिखते थे और फिर दुबारा मालदीव में अप्रैल से जून के महीनों में दिखते थे। जून-जुलाई में ये फिर से बड़ी संख्या में भारत में दिखते हैं।

एण्डर्सन को लगने लगा था कि हर साल ड्रैगनफ्लाई भारत से उड़कर मालदीव और सैशल्स द्वीप समूहों से होते हुए अफ्रीका प्रवास करते हैं और जून तक वापिस भारत चले जाते हैं। एण्डर्सन ने इन झुण्डों में ड्रैगनफ्लाई की पाँच प्रजातियाँ पाईं। लेकिन इनमें से 98 प्रतिशत ग्लोब स्किम्मर (या वॉण्डरिंग ग्लाइडर) थे। यह तो जानकारी थी कि पक्षियों की तरह कीट भी प्रवास करते हैं। लम्बे प्रवास का रिकॉर्ड अमरीका की मोनार्क तितली का है – कनाडा और संयुक्त राष्ट्र की सीमा से तीस करोड़ तितलियाँ दक्षिण के लिए रवाना होती हैं और मैक्सिको तक दिखती हैं; ये सालाना दस हज़ार किलोमीटर तक का प्रवास करती हैं। लेकिन किसी कीट द्वारा सोलह हज़ार किलोमीटर का प्रवास करना जिसमें से ग्यारह हज़ार किलोमीटर समुद्र के ऊपर हो, यह पहली बार पता चला था।

जब आमतौर पर ड्रैगनफ्लाई वयस्क कुछ हफ्तों के लिए ही जीते हैं, तो इतना लम्बा प्रवास वे कैसे कर पाते हैं?

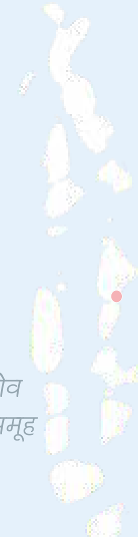

चार्ल्स एण्डर्सन

हर 6 हफ्तों में अगली पीढ़ी के वयस्क ड्रैगनफ्लाई उड़ने के लिए तैयार। मतलब भारत से निकले ड्रैगनफ्लाई के पर-परपोते ही वापिस भारत आते हैं!

ग्लोब स्किम्मर का यह लम्बा प्रवास कुछ सवाल खड़े करता है। पहला सवाल तो यह कि ये छोटे कीट, जो अपने शरीर में बहुत ज़्यादा ऊर्जा जमा कर नहीं रख सकते हैं, वे इतना लम्बा प्रवास, वो भी खुले समुद्र के ऊपर से होते हुए, कैसे करते हैं? चार्ल्स एण्डर्सन ने पता लगाया कि इन कीटों के प्रवास का रास्ता उन मॉनसूनी हवाओं का रास्ता है जो काफी ऊँचाई पर बहती हैं। मुमकिन है कि लाखों-करोड़ों ड्रैगनफ्लाई एक किलोमीटर से ज़्यादा की ऊँचाइयों पर इन धाराओं पर सवार होकर कुछ ही दिनों में अफ्रीका पहुँच जाती हैं। तो ड्रैगनफ्लाई कीट बरसात के साथ-साथ उड़ रहे थे! और जहाँ भी वे जाते अण्डे देने के लिए उन्हें मीठे पानी के पोखर मिल ही जाते। तो यह बात तो पक्की है कि ग्लोब स्किम्मर भारत से माले पहुँचते हैं। आगे की कहानी के पारिस्थितिक सबूत तो हैं, लेकिन और काम की ज़रूरत है।

दूसरा सवाल यह था कि जब आमतौर पर वयस्क ड्रैगनफ्लाई कुछ हफ्तों के लिए ही जीते हैं (हालाँकि कुछ प्रजातियों की इल्लियाँ कुछ महीनों से लेकर सात साल तक जीती हैं), तो इतना लम्बा प्रवास वे कैसे कर पाते हैं? चार्ल्स एण्डर्सन ने जब इस बात की जाँच की तो पता चला कि ड्रैगनफ्लाई अपने प्रवास के दौरान प्रजनन करते हैं – भारत में, फिर पूर्वी अफ्रीका, दक्षिणी अफ्रीका और दोबारा पूर्वी अफ्रीका में इस प्रजाति के ड्रैगनफ्लाई अण्डे देते हैं। हर बार 6 हफ्तों में अगली पीढ़ी के वयस्क ड्रैगनफ्लाई हवाओं के साथ उड़ने के लिए तैयार हो जाते हैं। इसका मतलब है कि भारत से निकले ड्रैगनफ्लाई के पर-परपोते ही वापिस भारत आते हैं!

प्रवासी ड्रैगनफ्लाई का उपलब्ध पहला रिकॉर्ड 1861 का है। लेकिन आज इतने सालों बाद भी हम उनके बारे में कई बातें नहीं जानते हैं। हाल में हुए शोध से तो लगता है कि ग्लोब स्किम्मर हिमालय से झुण्ड बनाते हुए प्रवास पर निकलते हैं और दक्षिण भारत और मालदीव से होते हुए अफ्रीका पहुँचते हैं। इनके वापसी के सफर में हवा की धाराएँ मालदीव के उत्तर से होते हुए इन्हें भारत पहुँचा देती हैं। लेकिन कई सवालों का जवाब अभी मिलना बाकी है। हवा की रफ्तार से लगता है कि एक-दो दिनों में ग्लोब स्किम्मर माले पहुँच जाते हैं। क्या वाकई में ऐसा होता है? अगली पीढ़ी को जन्म लेते ही कैसे पता चल जाता है कि हवा के साथ उन्हें कहीं और जाना है? ये और कई दूसरे रोचक सवालों पर अलग-अलग देशों में वैज्ञानिक कई सारे प्रवासी कीटों पर काम कर रहे हैं – हमें उनके नतीजों का इन्तज़ार रहेगा।

मुझे धूप से डर लगता है..

प्रियंवद

चित्रः प्रशान्त सोनी

मेरे कमरे में साल में दो बार धूप आती है। पहली बार तब, जब सर्दियाँ शुरू होती हैं, फिर तब, जब सर्दियाँ खत्म होती हैं। दोनों बार धूप और सर्दियाँ कमरे में गलबहियाँ डाले, साथ-साथ आती हैं। धूप अच्छी लगती थी क्योंकि उसमें सर्दियों की शुरुआती, कुनमुनी सिरहन भी रहती थी। साल में दो बार पृथ्वी की स्थिति बदलती है। इस दिशा के बदलने के बीच ही सूर्य मेरे कमरे के सामनेवाले आकाश के टुकड़े पर कुछ देर रहता है। जितनी देर वह रहता है, कमरा धूप से भर जाता है। जैसे बिना पंखुरियोंवाला एक बड़ा सुनहरा फूल खिला हो।

कुछ साल पहले की बात है। मैं धूप में बैठा किताब पढ़ रहा था। तभी मैंने देखा, मेरे पाँवों के पास फर्श पर गिलहरी का एक नन्हा बच्चा भी उस धूप में बैठा था। कहीं से आ गया था। सर उठाकर चारों ओर की दुनिया को हैरानी और खुशी से देख रहा था। यह दुनिया उसकी भी थी। इस पर उसका भी हक था। अपने दो पाँव पर खड़े होने की कोशिश में वह यह बता रहा था। वह अपने पँजों से अपनी देह खुजला रहा था। धूप में उसके बदन को शान्ति और सेंक दोनों मिल रहे थे।

मैं किताब पढ़ता रहा। धूप जब चली गई। मैंने किताब बन्द कर दी। नज़र घुमाकर देखा। वह नहीं था। कूदता हुआ कहीं चला गया था। मैं उठा। मैंने कुशन हटाया। मेरे मुँह से चीख निकल गई। बच्चा मरा हुआ पड़ा था। कूदते हुए वह किसी तरह सोफे पर चढ़कर कुशन के पीछे चला गया था। मैं जब कुशन के सहारे बैठा, वह दब गया था।

दूसरे साल यही धूप फिर आई। मैं फिर उसी तरह बैठा था। मैंने कुछ आवाज़ सुनी। नज़र घुमाकर देखा। फिर एक गिलहरी का बच्चा, पाँवों के पास फर्श पर धूप में बैठा था। सर उठाकर इधर-उधर देख रहा था। मुझे पिछले साल की बात याद थी। मुझे डर लगा कि वह फिर कहीं इधर-उधर न घुस जाए। मैं उठा। मैंने गली में खुलनेवाला दरवाज़ा खोल दिया, जिससे वह बाहर निकल जाए। कुछ देर उसने बाहर का बड़ा संसार देखा। फिर खुशी से, धीरे-धीरे चलता हुआ दरवाज़े की तरफ आया। कुछ क्षण रुका फिर बाहर निकल गया। जैसे ही वह दरवाज़े के बाहर निकला, कहीं से एक नेवला तीर की तरह आया। उसे मुँह में दबाया और ले गया।

कमरे में धूप अभी भी आती है। सूर्य के घोड़े उसका रथ अभी भी आकाश में ले जाते हैं। वहाँ से वह विश्व को देखता है। दुनिया को धूप और प्रकाश से भर देता है। मेरे कमरे को भी। पर मैं अब इस धूप में नहीं बैठता।

मुझे धूप से डर लगता है।

चक मक

करामात

सआदत हसन मंटो

लूटा हुआ माल बरामद करने के लिए पुलिस ने छापे मारने शुरू किए।

लोग डर के मारे लूटा हुआ माल रात के अँधेरे में बाहर फेंकने लगे।

कुछ ऐसे भी थे जिन्होंने अपना माल भी मौका पाकर अपने से अलहदा कर दिया, ताकि कानूनी गिरफ्त से बचे रहें।

एक आदमी को बहुत दिक्कत पेश आई। उसके पास शक्कर की दो बोरियाँ थीं जो उसने पंसारी की दुकान से लूटी थीं। एक तो वह जूँ-तूँ रात के अँधेरे में पासवाले कुएँ में फेंक आया, लेकिन जब दूसरी उसमें डालने लगा, खुद भी साथ चला गया।

शोर सुनकर लोग इकट्ठे हो गए। कुएँ में रस्सियाँ डाली गईं।

जवान नीचे उतरे और उस आदमी को बाहर निकाल लिया गया।

लेकिन वह चन्द घण्टों के बाद मर गया।

दूसरे दिन जब लोगों ने इस्तेमाल के लिए उस कुएँ में से पानी निकाला तो वह मीठा था।

उसी रात उस आदमी की कब्र पर दीए जल रहे थे।

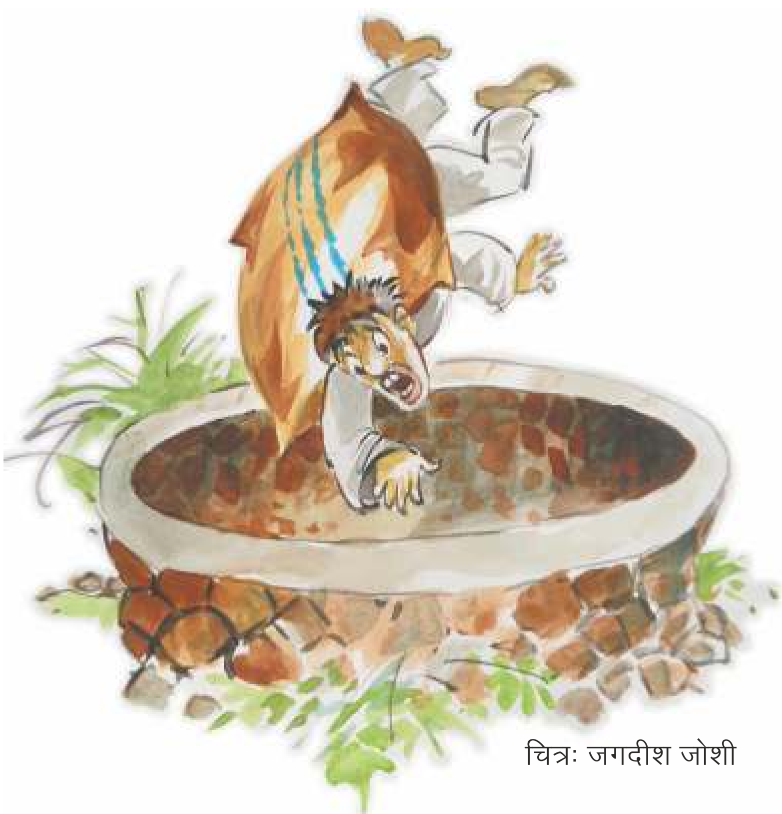

चित्रः जगदीश जोशी

प्रस्तुति एवं अनुवादः अरविन्द गुप्ता

दो भाई

दो भाई थे – एक कुंवारा और दूसरा शादीशुदा। उनका उपजाऊ खेत था जहाँ से उन्हें खूब पैदावार मिलती थी। आधी फसल एक भाई को मिलती, आधी दूसरे को।

शुरू में सब कुछ अच्छा चला। फिर बड़ा भाई अकसर रात को नींद में उठ जाता और सोचता – यह ठीक नहीं है। मेरे भाई की शादी नहीं हुई है और उसे फसल का आधा ही हिस्सा मिलता है। यहाँ मैं हूँ पत्नी और पाँच बच्चों के साथ। मेरे पास अपार सुरक्षा है अपने बुढ़ापे के लिए। पर जब मेरा भाई बूढ़ा होगा तो उसकी देखभाल कौन करेगा? इसलिए उसकी ज़रूरत मेरे से ज़्यादा है।

यह सोचकर बड़ा भाई पलंग से उठकर अपने छोटे भाई के घर चुपके से जाता और उसके गोदाम में एक बोरा अनाज डाल आता।

कुँवारा भाई भी इसी तरह रात को उठने लगा। हर बार नींद से उठने के बाद वो अपने आप से कहता – यह ठीक नहीं है। मेरे भाई की पत्नी और पाँच बच्चे हैं और उसे भी फसल का सिर्फ आधा हिस्सा ही मिलता है। मेरे यहाँ खानेवाला मैं अकेला हूँ। तो क्या यह ठीक है कि मेरे भाई जिसकी ज़रूरतें मुझसे कहीं ज़्यादा हैं, को भी मेरे बराबर की फसल मिले? फिर वो रात को उठकर अपने भाई के गोदाम में एक बोरा अनाज डाल आता था।

एक दिन वो दोनों रात को पलंग से एक ही समय पर उठे और एक-एक अनाज का बोरा अपनी पीठ पर लादे एक-दूसरे से टकराए।

दोनों भाइयों की मृत्यु के बहुत साल बाद शहरवासी एक मन्दिर बनाने की सोच रहे थे। मन्दिर के लिए उन्होंने उसी स्थान को चुना जहाँ दोनों भाई टकराए। उन्हें शहर में उससे पवित्र स्थान कहीं और नहीं मिला।

कुछ लघु कथाएँ

पूजा और प्रेम

कुछ लोग पूजा करते हैं, कुछ पूजा नहीं करते हैं। यह अन्तर बिलकुल महत्वपूर्ण नहीं है। पर कुछ लोग प्रेम करते हैं और कुछ नहीं यह अन्तर बहुत महत्वपूर्ण है।

मसला यकीन का

मुल्ला नसीरुद्दीन का घर जल रहा था। बचने के लिए वो घर की छत पर बैठ गए। नीचे उनके दोस्त परेशान थे। उन्होंने एक कम्बल को नीचे तानकर रखा और वे मुल्ला से नीचे कम्बल पर कूदने को कह रहे थे, "कूदो, मुल्ला कूदो", वो बार-बार कह रहे थे।

"नहीं मैं नहीं कूदूँगा", मुल्ला ने कहा, "मैं तुम लोगों को अच्छी तरह जानता हूँ मेरे कूदते ही तुम कम्बल हटा दोगे।"

"मुल्ला, पागलों जैसी बातें मत करो। हम मज़ाक नहीं कर रहे हैं। मामला बड़ा गम्भीर है। नीचे कूदो!"

"नहीं", मुल्ला नसीरुद्दीन ने कहा, "मुझे तुम में से किसी पर भी यकीन नहीं है तुम उस कम्बल को ज़मीन पर बिछा दो फिर मैं कूदूँगा।"

बन्दर और मछली

"तुम आखिर यह क्या कर रहे हो?" मैंने बन्दर से पूछा। मैंने उसे पानी में से मछली को निकालकर पेड़ पर रखते हुए देखा।

"मैं मछली को डूबने से बचा रहा हूँ।" उसने उत्तर दिया।

एन्थनी डी मैलो की सॉन्ग ऑफ ए बर्ड से साभार

चित्रः जगदीश जोशी

ध्यान

केरमन के कवि आवधि अपने आँगन में बैठे थे। वो एक बर्तन पर झुके हुए थे। तभी सूफी-सन्त शमसे तबरीज़ी वहाँ से गुज़रे।

"आप यह क्या कर रहे हैं?" उन्होंने कवि से पूछा।

"एक कटोरे में चन्द्रमा की परछाई पर ध्यान केन्द्रित कर रहा हूँ।" कवि ने उत्तर दिया।

"अगर आपकी गर्दन नहीं टूटी हो तो आप फिर चाँद को सीधे आसमान में क्यों नहीं देखते?"

टोनी डी मैलो की द प्रेयर ऑफ द फ्रॉग (एक मेंढक की प्रार्थना) से साभार

बाघ आ रहा है
डव्वल वास्ता रो वास्ता

मधुकर रामटेके

सालों पहले की बात है। हमारे गाँव में एक अजब वाक्या हुआ! महाराष्ट्र के एक सुदूर कोने में, गढ़चिरौली के घने जंगलों के ठीक बीच बसा है हमारा गाँव। हम अकसर शिकार करने, जानवरों को चराने, फल, लकड़ी जैसी ज़रूरी चीज़ें इकट्ठा करने के लिए घने जंगल के ठेठ अन्दर तक चले जाते। यहाँ अकसर जंगली जानवरों से सामना हो जाता था। कभी-कभी तो भालू और बाघ तक से लड़ना पड़ता। इसलिए जंगल में हम पूरी तैयारी से जाते थे। शिकार की कोई खास कोशिश नहीं रहती थी हमारी। पर हाँ, जिस दिन हमें शिकार मिल जाता वो बड़ी खुशी का दिन होता। और जिस दिन नहीं मिलता, उस दिन भी दुनिया की कोई फिक्र-चिन्ता किए बगैर सो जाते!

तभी वो अजीब घटना हुई...

उस पूरे दिन गाँव के मवेशी पास के जंगल में चरते रहे थे। शाम होते ही वे रोज़ की तरह गाँव की ओर लौटने लगे। तभी हमने जो देखा कि हैरान रह गए। गाय-बैलों के साथ-साथ एक बाघ भी गाँव की तरफ आ रहा था...!

वो एक बाघ था और...घास चरते हुए आ रहा था! हमारे जानवरों के साथ, बिना उन्हें कोई नुकसान पहुँचाए। हम रोमांच से भर उठे!

उस दिन पूरे गाँववालों ने डर के मारे अपने जानवरों के साथ-साथ खुद को भी घरों में बन्द कर रक्खा। पूरा गाँव सुन्न-सपाट था। लोगों ने सोचा था कि बाघ रात को जंगल में लौट जाएगा। लेकिन ऐसा कुछ नहीं हुआ!

सुबह सबने देखा कि बाघ महुए के पेड़ के नीचे मज़े से हरी-हरी घास चर रहा था। वह पेड़ गाँव के बाहरी तरफ था। इस दृश्य ने सबको भयभीत कर दिया। तभी यह खबर तेज़ी से फैलने लगी कि कुछ दिन पहले गाँव के एक आदमी की भिड़ंत जंगल में एक बाघ से हुई थी। अपने बचाव के लिए उसने गोली चलाई जो बाघ के सिर में फँस गई थी। पर इससे वो मरा नहीं। अब लोग दावा करने लगे थे कि यह वही गोली लगा बाघ है।

इस खबर के आधार पर गाँववालों ने कयास लगाया कि सिर में गोली लगने से वह बाघ भूल गया होगा कि वह एक बाघ है और गाय-बैलों की तरह व्यवहार करने लगा है!!!

पर बाघ तो आखिर बाघ ही है! कब तक वो घास खाता रहेगा... अपने आसपास को कोई नुकसान पहुँचाए बगैर? पूरा गाँव इसी खौफ के साए में दम साधे था। वैसे तो हमारे गाँव के लोग बेहद हिम्मती थे। वे जंगल में बिना डर के अकेले घूमते थे। शिकार करते थे। हर वक्त हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहते थे। कभी जब खतरा एकदम से सामने आ जाता तो पेड़ पर चढ़कर अपनी जान बचा लेते थे। लेकिन इस घास खानेवाले बाघ ने सभी को उलझन में डाल दिया था। जंगल में एक आदमखोर बाघ से आसानी से भिड़ जानेवाले, एक घास खानेवाले बाघ से बेहद डरे हुए थे।

वहीं दूसरी ओर वो जंगली बिल्ली मज़े में थी। सुबह मवेशियों के साथ जंगल चली जाती, दिन भर घास चरती और शाम को उन्हीं के साथ वापस लौट आती। गाँव में उसे आए चार दिन बीत गए थे। पर गाय-बैलों पर इसका कोई भी असर नहीं दिख रहा था। अगर कोई जानवर उन्हें नुकसान पहुँचाए बिना उनके साथ खाना-पीना कर रहा है तो इससे उन्हें क्या फर्क पड़ता था! फिर चाहे वो बाघ हो या कोई इंसान।

लेकिन चरवाहे तो बहुत ही डरे हुए थे। अब वे भालों, तलवारों यहाँ तक कि बन्दूकों से लैस होकर जंगल जाने लगे थे। उनका पूरा दिन इसी डर में बीतता कि कहीं बाघ उन पर हमला न कर दे! बाघ अकसर मवेशियों के लौटने के 15 मिनट बाद गाँव लौटता था। एक बाघ आनेवाला है, इस ख्याल में ही इतना डर था कि गाँववाले अदेर ही अपने गाय-बैलों को घरों के भीतर बाँध लेते। लेकिन बाघ को शायद गाँव की बजाय उसी महुए के नीचे रहना ज़्यादा पसन्द था।

बाघ पर नज़र रखने और लोगों की सुरक्षा की दृष्टि से कुछ जवान लड़के भाले और बन्दूकें लेकर रात-रात भर जागकर अपने घरों पर पहरा देने लगे थे। गाँव की फ़िज़ा पूरी तरह से बदल गई थी। अब तक औरतें गाँव से डेढ़ किलोमीटर दूर नदी से खुद ही पानी भर लाती थीं लेकिन अब उनकी सुरक्षा के लिए एक आदमी हाथ में बन्दूक लिए उनके साथ जाता था।

पर इससे भी बड़ी समस्या शौच जाने की थी। उस समय गाँव में घरों में शौचालय नहीं होते थे। शौच के लिए बाहर खुले में जाना होता था। लेकिन ऐसी हालत में जब आसपास बाघ घूम रहा हो, हम जंगल में कैसे जा सकते थे! इसलिए सभी बेसब्री से बाघ के जंगल जाने का इन्तज़ार करते। वैसे उसके जाने के बाद भी अकेले जंगल जाने में डर बना रहता। सभी किसी न किसी के साथ जाते। ऐसे में सोचो उन लोगों का क्या हाल होता होगा जिन्हें रात में हाजत महसूस होती होगी?

सभी चित्रः जगदीश जोशी

इस भयानक स्थिति से बचाने के लिए माँ ने रात में खाना खाने पर पूरी तरह से रोक लगा दी थी। चाहे भूख हो न हो हमें शाम पाँच बजे तक खाना खिला दिया जाता। और छह बजे तक हम अपने सारे काम निपटाकर घरों में बन्द हो जाते। सभी घरों में बड़ों-छोटों की यही स्थिति थी। हम जो सुबह पाँच बजे तक उठ जाने के आदी थे अब जबरन सुबह नौ बजे तक घर में बन्द पड़े रहते। वह भी बिना शौच किए! बड़ी मुसीबत थी!

हमारा छोटा-सा कुडकेल्ली गाँव अजीब दहशत से गुज़र रहा था। बाघ के खौफ के चलते हम अपना "पोला" जैसे लोकप्रिय त्यौहार भी न मना पाए! पर जब अति होने लगी तो पन्द्रह-बीस दिन बाद कुछ गाँववाले पुलिस और वन विभाग के अधिकारियों से इसकी शिकायत कर आए। खैर, हुआ वही जिसका शक था। उन्हें गाँववालों की बात पर यकीन नहीं आया। और वे सुने हुए को जाँचने हमारे गाँव आ गए। यहाँ जब महुए के नीचे बाघ को चरते देखा तो उनके मुँह खुले के खुले रह गए। और बाघ पर उनकी नज़र पैनी हो गई थी। दरअसल उनके दिमाग में उसे मारने की योजना पलने लगी थी।

योजना तैयार थी। बस उसे अंजाम तक पहुँचाना शेष था। बाघ की पसन्दीदा जगह यानी महुए के पेड़ के पास एक मचान बनाया गया। पास के दो पेड़ों पर भी एक मचान बनाया गया। तय दिन को अधिकारी बन्दूकें लेकर मचान पर निशाना साधकर बैठ गए। सभी गाँववालों को अपने घर के दरवाज़े बन्द रखने का सख्त आदेश दिया गया। (उन दिनों घरों में खिड़कियाँ नहीं होती थीं।) एक व्यक्ति को जंगल के एक पेड़ पर बैठा दिया गया ताकि अधिकारियों तक बाघ के गाँव की ओर लौटने की सूचना पहुँचाई जा सके।

आज जब भी मैं "बाघ बचाओ" का नारा सुनता हूँ तो गले में एक गोमड़-सा अटक जाता है।

हर शाम की तरह मवेशियों का झुण्ड गाँव लौट आया। पन्द्रह-बीस मिनट बाद पेड़ पर बैठा आदमी चिल्लाया, "डव्वल वास्ता रो वास्ता।" (बाघ आ रहा है।) सभी अधिकारियों ने अपनी बन्दूकों से निशाना साध लिया। उन्होंने बाघ को आते देख लिया था, लेकिन गाँववालों ने उन्हें आगाह किया था कि जब तक वो एकदम पास न आ जाए, वे गोली न चलाएँ। वे किसी भी प्रकार की दुर्घटना से बचना चाहते थे।

इन सब से बेखबर बाघ अलमस्त चला आ रहा था। जैसे ही वह मचान के पास पहुँचा बन्दूकें गरजने लगीं। पहली गोली सीधे उसके सिर पर लगी। गोली लगते ही वो ज़ोर-से दहाड़ा और लगभग दस से बीस फीट तक गोली की दिशा में ऊपर उछला। एक भी सेकंड गँवाए दूसरे अधिकारियों ने भी गोलियाँ दागनी शुरू कर दीं। बाघ पर जैसे गोलियों की बौछार हो रही थी और वह वहीं ज़मीन पर ढेर हो गया।

खबर सुनते ही सभी अपने-अपने घरों से दौड़े चले आए। एक लम्बे समय बाद वे गाँव में बेखौफ घूम पा रहे थे। मरे हुए बाघ को गाँव के बीच में लाया गया। इस असाधारण घटना को देखने के लिए पूरा गाँव इकट्ठा हो गया था। लोग नाच-गाकर खुशियाँ मना रहे थे।

हालाँकि हमारा गाँव जंगल के बीच में बसा हुआ था, पर यह घटना हम सभी के लिए अनूठी थी। एक बाघ का अपना कुदरती स्वभाव भूल जाना सभी को भयभीत किए हुए था। वो मरा तो सबने चैन की साँस ली। लेकिन आज मुझे इस बात पर आश्चर्य होता है कि क्यों वनविभाग के अधिकारी उसे पकड़कर चिड़ियाघर नहीं ले गए। उस समय तक हमें तो चिड़ियाघर के बारे में कुछ पता नहीं था पर वनाधिकारी को तो पता ही होगा! फिर क्यों उन्होंने उस बाघ को मार डाला जो यह तक भूल गया था कि वह एक बाघ है?

आज जब भी मैं "बाघ बचाओ" का नारा सुनता हूँ तो उस बाघ की लाश मेरी आँखों के सामने घूम जाती है और गले में एक गोमड़-सा अटक जाता है।

अनुवादः वर्षा

(साभारः पासवर्ड)

मेरा पन्ना

पढ़ाई हो गई शुरू

लो आ गया जुलाई गुरू
हो गई अब पढ़ाई शुरू
छुट्टियों के खत्म हुए दिन
पढ़ाई में अब हो जाओ लीन
नए बस्ते का नया शौक
खेलने पर लग गई रोक
लो आ गया जुलाई गुरू
हो गई अब पढ़ाई शुरू

विद्यालय अब तो जाना है
परीक्षा में अव्वल आना है
बस पढ़ाई बस पढ़ाई
ना जाने यह किसने बनाई
शाला चलें का नारा दिया है
होमवर्क इतना सारा दिया है
लो आ गया जुलाई गुरू
हो गई अब पढ़ाई शुरू

– श्रेष्ठ, आठवीं,
हरविलास गोयल इ. का. उझानी, बदायूँ, उ. प्र.

वर्षा का मौसम आया है
संग ठण्डी हवाएँ लाया है
छाता लेकर निकले घर से
रपट पड़े हैं हम सर से
अब हमको कौन उठाएगा
कीचड़ से कौन बचाएगा
अभी तो पानी बरस रहा है
फिर डण्डे हम पर बरसेंगे
अब हम घर कैसे जाएँगे
माँ को कैसे समझाएँगे

– साक्षी अवस्थी, छठी,
लखीमपुर खीरी, उ. प्र.

सारा का बगीचा

एक लड़की थी। उसका नाम सारा था। उसका एक बगीचा था। उसके फल बहुत मीठे थे। बगीचा बहुत बड़ा था। वहाँ बहुत सारे तोते बैठते थे। और पपीते खाते थे। सारा वहाँ रोज़-रोज़ खेलने जाती थी। एक दिन अचानक तोते का आना बन्द हो गया। क्योंकि पपीते खत्म हो गए थे। इसलिए सारा बहुत दुखी हो गई। तोते से उसका दुख नहीं सहा जा रहा था। तोते फिर से पपीते पर आने लगे और सारा बहुत खुश हो गई।

–रिया, सातवीं,
एकलव्य होशंगाबाद, म. प्र.

–आकांक्षा खादेटकर, चौथी, आनन्द निकेतन स्कूल, सेवाग्राम, वर्धा, महाराष्ट्र

काँच ठोस है या द्रव

सुशील जोशी

अकसर हम पढ़ते हैं कि पदार्थ तीन अवस्थाओं में पाया जाता है – ठोस, द्रव और गैस। पानी एक ऐसा पदार्थ है जो सामान्य रूप से तीनों अवस्थाओं में मिल जाता है – भाप, पानी की गैस अवस्था है। बर्फ ठोस अवस्था है और पीने, नहाने का पानी तो तुम जानते ही हो। तुम्हें इन अलग-अलग अवस्थाओं के खास-खास गुण भी मालूम होंगे!

द्रव अवस्था का विशेष गुण है कि द्रव बहते हैं। दूध, पानी, तेल वगैरह को जिस बर्तन में भरोगे, उनका आकार उस बर्तन जैसा ही हो जाएगा। वैसे यह बात पूरी तरह सही नहीं है। दूध बर्तन में नीचे-नीचे ही भरता है। मगर यदि दूध के पैकेट का आधा लीटर दूध हम घर पर पतीली में डाल दें तो भी आधा लीटर ही रहता है।

गैसें इस मामले में थोड़ी अलग हैं। आधा लीटर गैस को अगर कमरे में छोड़ दोगे तो वह पूरे कमरे में भर जाएगी। जैसे एक सिलेंडर में भरी गैस से कितने सारे गुब्बारे भर जाते हैं। उसके अन्दर गैस को दबा-दबाकर भरा जाता है। यानी गैस को दबा सकते हैं, द्रवों को नहीं।

और ठोस तो एकदम अलग हैं। द्रव के ही समान उन्हें दबाया नहीं जा सकता। मगर द्रव जिस तरह के बर्तन में भरने पर बर्तन का ही रूप ले लेते हैं, वैसे ठोस नहीं करते। लोहे का एक टुकड़ा किसी भी डिब्बे में रखा जाए, वह डिब्बे जैसे नहीं हो जाएगा। ठोस बहते भी नहीं हैं।

अब यह तो हो गई परिभाषा की बात। चलो आसपास के कुछ उदाहरण देखते हैं और सोचते हैं कि वे चीज़ें ठोस हैं, द्रव हैं या गैस हैं। हवा के बारे में क्या ख्याल है? गैस ही लगती है। क्या यह पूरे बर्तन में भर जाती है? कैसे पता चलेगा? और क्या इसे दबाया जा सकता है? मुझे तो लगता है दबाया जा सकता है मगर तुम भी किसी तरह से पक्का करके ही आगे बात करना।

लोहे की कील तो ठोस लगती है ना? न बहती है, न दबा सकते हैं, और किसी बर्तन में रख दो तो बर्तन के आकार की थोड़े ही हो जाती है! और पत्थरों के बारे में क्या लगता है? परिभाषा के हिसाब से बताना।

चलो आगे बढ़ते हैं। शकर ठोस है कि द्रव? जल्दबाज़ी मत करो। बर्तन में भरकर देखा है शकर को? पत्थर के टुकड़े जैसे एक ही जगह रखी रहती है क्या? जैसी बरनी में भरोगे वैसी ही तो हो जाएगी, है ना? और एक बर्तन में से दूसरे बर्तन में उँड़ेलोगे, तो क्या होगा? बहकर दूसरे बर्तन में चली जाएगी ना? शकर तो द्रव लगती है!

और आटा? बोरी में भरो तो बोरी जैसा हो जाता है, टंकी में भरो तो टंकी जैसा हो जाएगा। और तो और दबा भी सकते हैं। थोड़ा ज़्यादा आटा हो, तो दबा-दबाकर बर्तन में भरते ही हैं ना? तो आटा तो गैस जैसा हो गया। और यदि आटा खाली करने के बाद बोरी को फटकोगे तो आटा पूरे कमरे में फैलेगा कि नहीं?

यानी कांच ठोस नहीं बल्कि द्रव है – वह बहता है। यह ज़रूर है कि धीरे-धीरे बहता है। मगर चाहे जितना धीमे बहे, बहता है तो द्रव है। और इस सबूत के आधार पर सबने मान लिया कि कांच द्रव है। बुरा लगता है मगर जो सच्चाई है उसे तो मानना ही पड़ेगा।

चित्रः अम्बर, आठ साल, आनन्द निकेतन डैमोक्रेटिक स्कूल, भोपाल

बड़ी समस्या है। परिभाषा तो ठीक-ठाक लगती है मगर आसपास की चीज़ों को देखो तो बराबर से फिट नहीं होती। अब काँच को ही देखो। अच्छा-खासा ठोस है ना? मगर कुछ वैज्ञानिकों ने सन्देह जताया। उनको लग रहा था कि काँच शायद ठोस नहीं बल्कि द्रव है। नहीं, नहीं पागल वैज्ञानिक नहीं हैं, ठीक-ठाक समझदार वैज्ञानिकों ने कहा कि काँच ठोस नहीं बल्कि द्रव है।

तो द्रव है यानी उसे बहना चाहिए। घरों, ट्रेनों, बसों की खिड़कियों में शीशे लगे होते हैं। हम काँच के गिलास में भरकर पानी और शरबत और चाय तक पीते हैं। तो क्या चाय पीते-पीते गिलास बह जाता है? अरे अभी ऊपर तो कहा था कि हम द्रवों को बर्तन में भरते हैं, अब बात हो रही है कि काँच के बर्तन खुद ही द्रव हैं। तो देखना पड़ेगा कि वैज्ञानिकों को क्या सूझी कि अच्छे-खासे ठोस काँच को द्रव कहने लगे।

इन वैज्ञानिकों ने कहा कि रोज़ाना देखने पर काँच बहता नहीं लगता मगर वास्तव में वह बहता है। यानी उनका कहना था कि काँच बहुत गाढ़ा द्रव है और धीरे-धीरे बहता है। तो कहाँ देखा काँच को बहते? वैज्ञानिकों ने कहा कि उन्होंने गिरजाघरों में काँच को बहते देखा है।

इन वैज्ञानिकों ने देखा कि कुछ गिरजे ऐसे हैं जो करीब 1000 साल पहले बने थे। इनमें से कुछ की खिड़कियों पर जो काँच लगाए थे वे भी उसी समय लगाए गए थे और फिर कभी बदले नहीं गए। मतलब इन गिरजों पर लगे काँच हज़ार-एक साल पुराने हैं।

काँच ठोस है या द्रव

पिछले पन्ने से जारी

वैज्ञानिकों ने यह भी देखा कि ये काँच नीचे के किनारे पर थोड़े ज़्यादा मोटे हैं – मतलब ऊपरी हिस्सा और बाकी काँच की मोटाई की तुलना में निचले हिस्से की मोटाई थोड़ी ज़्यादा है। बस मन में सवाल उठ गया। ये नीचे से मोटे क्यों हो गए? इस सवाल को खास तौर से ध्यान में रखना, बाद में पता चलेगा कि इस सवाल में कुछ बात है?

जब काँच लगाए गए होंगे तब तो बढ़िया रहे होंगे। एक तरफ से मोटे थोड़ी ना रहे होंगे। तो निष्कर्ष निकला कि इतने सालों में लगे-लगे ये नीचे से मोटे हो गए। क्यों हो गए?

इसकी व्याख्या यह की गई कि काँच धीरे-धीरे बहता है। इसलिए लगाने के बाद बहते-बहते निचले हिस्से में काँच इकट्ठा हो गया है और वह मोटा हो गया है।

यानी काँच ठोस नहीं बल्कि द्रव है – वह बहता है। यह ज़रूर है कि धीरे-धीरे बहता है। मगर चाहे जितना धीमे बहे, बहता है तो द्रव है। और इस सबूत के आधार पर सबने मान लिया कि काँच द्रव है। बुरा लगता है ना, कि ठोस चीज़ को द्रव कह दें? प्लूटो को जब ग्रहों की बिरादरी से बाहर किया गया था तो भी खराब-खराब लगा था ना? मगर जो सच्चाई है उसे तो मानना ही पड़ेगा।

परन्तु समय बीतने के साथ कई और वैज्ञानिकों ने गिरजाघरों के उन शीशों पर ध्यान दिया। कुछ वैज्ञानिकों ने उस सवाल को फिर से पूछा – "ये (शीशे) नीचे से मोटे क्यों हो गए?" और उन्होंने कहा कि यह सवाल गलत ढंग से पूछा गया है। सवाल वास्तव में यह होना चाहिए – "ये शीशे नीचे से मोटे क्यों हैं?" क्योंकि पहले सवाल से ऐसा लगता है कि कभी ये शीशे ऊपर से नीचे तक एक जैसे थे और बाद में नीचे से मोटे हो गए हैं। जबकि दूसरे सवाल में हम यह मानकर नहीं चल रहे हैं कि पहले मोटाई एक-सी थी और बाद में बदल गई है।

तो जब दूसरे सवाल का जवाब खोजने की कोशिश शुरू हुई तो कुछ वैज्ञानिक यह जानने में लग गए कि कहीं ये काँच शुरू से ही तो ऐसे नहीं थे। यानी जब लगाए गए थे तभी शायद नीचेवाले हिस्से की मोटाई थोड़ी अधिक थी।

कुछ वैज्ञानिकों ने इस बात पर ध्यान दिया कि जब ये गिरजे बने थे तब काँच बनाने की तकनीक कैसी थी।

उन्होंने पता लगाया कि उस ज़माने में काँच की चादर बनाने के लिए जिस तकनीक का इस्तेमाल होता था उसे क्राउन ग्लास तकनीक कहते हैं। इस तकनीक में काँच को पहले पिघलाया जाता है। फिर पिघले हुए काँच के लोंदे को फैलाया जाता है और पीट-पीटकर एक चादर का रूप दिया जाता है। इस तकनीक की वजह से काँच की गोलाकार चकती बन जाती है। इसे काटकर चौकोर टुकड़े बनाए जाते हैं। इस तकनीक का परिणाम यह होता है कि चकती की परिधि पर काँच थोड़ा मोटा रहता है। ऐसे काँच को जब खिड़कियों पर मढ़ा जाता है तो मोटेवाले हिस्सों को नीचे की ओर रखा जाता है।

यानी इन वैज्ञानिकों ने स्पष्ट किया कि ये शीशे शुरू से ही नीचे की ओर थोड़े मोटे थे, ये बह-बहकर मोटे नहीं हुए हैं। यानी सुकून की बात है कि काँच द्रव नहीं ठोस ही है।

मगर काँच को लेकर यह जो बहस चली इसमें से कई बातें सामने आईं। जैसे यह भी पता चला कि गिरजे के काँच चाहे ठोस हों, मगर ऐसे काँच भी होते हैं जो पूरी तरह ठोस नहीं होते। अन्य पदार्थों के बारे में समझ में आया कि ठोसपन और द्रवपन शुद्ध रूप में नहीं पाया जाता। तो सवाल उठता है कि फिर ठोस और द्रव का वर्गीकरण कैसे करें? करें भी या नहीं?

इसकी बात मैं फिर कभी करूँगा। काँच के बारे में भी अभी बहुत कुछ बचा है कहने को। अभी तो इतने से ही सन्तुष्ट हो जाओ कि गिरजों की खिड़कियों पर लगे शीशे ठोस ही हैं।

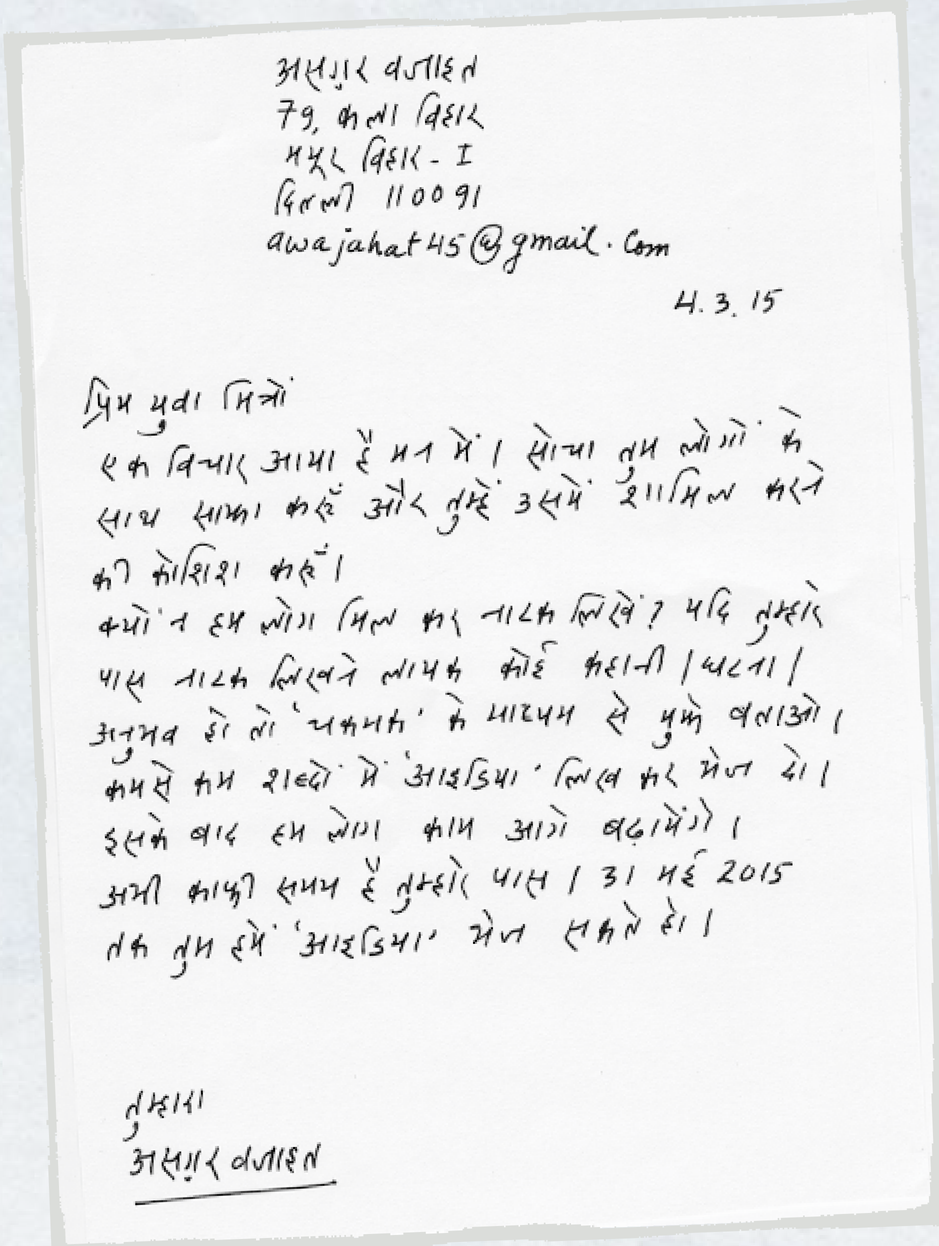

असग़र वजाहत
79, कला विहार
मयूर विहार - I
दिल्ली 110091
awajahat45@gmail.com

4.3.15

प्रिय युवा मित्रों
एक विचार आया है मन में। सोचा तुम लोगों के साथ साझा करूँ और तुम्हें उसमें शामिल करने की कोशिश करूँ।
क्यों न हम लोग मिल कर नाटक लिखें? यदि तुम्हारे पास नाटक लिखने लायक कोई कहानी/घटना/अनुभव हो तो 'चकमक' के माध्यम से मुझे बताओ। कम से कम शब्दों में 'आइडिया' लिख कर भेज दो। इसके बाद हम लोग काम आगे बढ़ायेंगे। अभी काफ़ी समय है तुम्हारे पास। 31 मई 2015 तक तुम हमें 'आइडिया' भेज सकते हो।

तुम्हारा
असग़र वजाहत

प्रिय दोस्तो,

असगर वजाहत हमारे देश के जाने-माने रचनाकार हैं। उन्होंने कई विधाओं में लिखा है। उनका नाटक "जिन लाहौर नई वेख्या ओ जन्मयाई नईं" किसने नहीं देखा होगा! दुनिया भर में उसके हज़ारों शो हुए हैं।

वजाहत साब की चिट्ठी तुमने पढ़ी। क्या खूबसूरत मौका है न! तो अपनी आइडिए हमें भेज दो। जिनके आइडिए वजाहत साब को जँचेंगे उन्हें नाटक लेखन कार्यशालाओं में भाग लेने का मौका मिलेगा। और उनके साथ तुम अपने-अपने नाटकों पर काम कर सकोगे। ये नाटक हम चकमक में प्रकाशित करेंगे। इनकी एक किताब छापने का भी विचार है। और सोचते हैं कि इनका मंचन भी हो। अच्छा है न ये सपना! तो चलो इसे पूरा करने की कोशिश करते हैं।

आइडिए भेजने के लिए
ये रहा चकमक का पता:
चकमक
ई-10 शंकर नगर, शिवाजी नगर,
भोपाल - 462 016
फोन: 0755 4252927
ईमेल - chakmak@eklavya.in

आधा सेब

एक बार की बात है, एक लड़की थी उसका नाम था सन्ना। वह कक्षा चौथी में पढ़ती थी। सन्ना के कुछ दोस्त भी थे। उनका नाम था- जया, प्रताप, हर्षा और मंजू। सन्ना के दादा सन्ना और उसके दोस्तों को (जब वो सन्ना के घर आते) कहानियाँ सुनाते थे और कभी उनको हँसाते। सन्ना के स्कूल में पिकनिक होने जा रही थी। पिकनिक के दिन सन्ना बड़ी खुशी में सुबह स्कूल के लिए तैयार हो रही थी। पिकनिक के समय सन्ना, बस में अपने सबसे अच्छे दोस्तों जया, प्रताप, हर्षा और मंजू के साथ बैठी थी। वह खूब बातें कर रहे थे। रात के समय सबने होटल में अपने लिए कमरा लिया। सुबह का मौसम बहुत अच्छा था और सुहावना भी था। सुबह उठकर सारे दोस्त वॉक करने गए। अचानक सन्ना को प्यास लगने लगी। तो सन्ना ने अपने दोस्तों को कहा कि मुझे प्यास लगी है। तब सारे दोस्त आगे निकल गए और सन्ना एक नल के पास पहुँची। जब सन्ना नल से पानी पी रही थी, तभी सर ने सारे बच्चों को बुलाया। तभी सन्ना ने नल से कुछ दूरी पर गली में देखा कि कुछ बच्चे थे। वह उन्हें देखने लगी। वो एक आधे सेब के लिए झगड़ रहे थे। तब उसने देखा कि उसके टीचर चले गए हैं। सन्ना रोने लगती है। तब उसने सोचा कि अगर किसी ने मुझे अकेला देखा तो कोई मुझे उठा सकता है। तो सन्ना ने एक्टिंग की कि वह पानी पी रही है। फिर वह इधर-उधर देखने लगी। उसने सोचा कि अगर मैं कहीं और जाऊँगी तब भी वो मुझे ढूँढ़ नहीं पाएँगे। तब उसने वहाँ देखा कि एक अंकल के पास फोन था। सन्ना ने उनसे फोन माँगा। उसने सर को फोन किया। तब वह बस में बैठी। वह सोच रही थी कि उन बच्चों का क्या हुआ होगा जो सेब के लिए झगड़ रहे थे।

— सारा, चौथी, कुल्लू, हिमाचल प्रदेश

— चन्द्रिका, सातवीं, धारावी आर्ट रूम मुम्बई, महाराष्ट्र

मेरा पन्ना

— भवानी,
एपीएफ स्कूल
धमतरी, छत्तीसगढ़

मेरा पन्ना

— नीतू, छठी, केन्द्रीय विद्यालय-1, भुज, गुजरात

— ज्ञानवी जैन, दूसरी,
सत्य साईं विद्या विहार,
इन्दौर, म. प्र.

मेरा छाता

पीले रंग का मेरा छाता
यह वर्षा से मुझे बचाता
कड़ी धूप या रिमझिम पानी
दोनों में है साथ निभाता
पीले छाते की है साथी
मेरी यह काली बरसाती
खुद पानी से तर हो जाती
लेकिन मुझको सदा बचाती
इसके साथ मज़ा जीने का
बारिश की बूंदें पीने का
अच्छा लगता मुझको भाता
पीले रंग का मेरा छाता

प्रस्तुति-नाम नहीं लिखा,
प्रीसिडियम स्कूल, दिल्ली

एक था हाजी एक था नाजी

स्वयं प्रकाश

चित्रः अतनु राय

हाजी गम्भीर रूप से बीमार थे और अस्पताल के आई सी यू में भर्ती थे।

उन्होंने अपने छोटे बेटे को बुलाया और कहा, “बेटा! अब मेरी ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं। तुम मेरे बच्चों में सबसे ज़्यादा मेहनती और ज़िम्मेदार हो। मेरे बाद चार इमली के सातों बंगले तुम ले लेना और ग्रीन सिटी के पन्द्रह फ्लैट भी मैं तुम्हें दे जाऊँगा। बल्कि मेरी तो इच्छा है कि साउथ एवेन्यू के दस फ्लैट भी तुम ही ले लो। बोलो बेटा, ले लोगे न!”

लड़का क्या बोलता? आँसू पोंछता चला गया।

उसके जाने के बाद नर्स हाजी की पत्नी से बोली, “आपके पति आपके छोटे बेटे से कितना प्यार करते हैं! करोड़ों की ज़ायदाद अकेले उसे देकर जा रहे हैं!”

“वह करोड़ों की ज़ायदाद नहीं है!” हाजी की पत्नी ने कहा।

“तो फिर?” नर्स ने आश्चर्य से पूछा।

“ये तो वो घर हैं जहाँ मेरे पति रोज़ सुबह दूध पहुँचाते हैं।” हाजी की पत्नी ने जवाब दिया। ◆

रईस उद्योगपति का बेटा नया-नया नेता बना था। एक दिन उसके जी में आई कि गाँव देखा जाए और किसी किसान से मिला जाए। उसके गाँव जाने की व्यवस्था की गई और उसके लिए एक किसान का इन्तज़ाम भी किया गया। किसान था – हाजी।

नए-नए नेता ने हाजी से पूछा, “तुम किसान हो?”

हाजी बोला, “क्या करें मालिक!”

नेता को समझ में नहीं आया कि ये हाँ कह रहा है या ना।

नेता ने पूछा, “तुम्हारे पास कितनी ज़मीन है?”

हाजी बोला, “तीन बीघा हुज़ूर।”

“तीन बीघा यानी कितनी?” नेता ने पूछा।

साथ आए बैंक अधिकारी ने समझाया, “सर, जो तीन बीघा है वो अनफॉर्चुनेट्ली चार बीघा से कुछ कम है, लेकिन एट द सेम टाइम फॉर्चुनेट्ली दो बीघा से पूरे एक बीघा ज़्यादा है, जो कि मैं समझता हूँ कि काफी महत्वपूर्ण बात है।”

“तुम किस चीज़ की खेती करते हो?” नेता ने पूछा।

“जी, कपास की।”

“व्हाट इज़ कपास?” नेता ने बैंक अधिकारी से पूछा।

“वही जिससे आपका कुरता बना है।” हाजी ने जवाब दिया।

“ओह! तो तुम कुरते की खेती करते हो!” नेता बोला। “अच्छा तुम्हारे पास बीस्ट कितने हैं?”

“..............”

“जानवर कितने हैं?” बैंक अधिकारी ने समझाया।

“दो बैल हैं हुज़ूर।” हाजी ने बताया।

“गुड, कितना दूध देते हैं?” नेता ने पूछा।

हाजी बैंक अधिकारी के कान के पास मुँह ले जाकर बोला, “लगता है जान लेकर ही छोड़ेगा।”

बोलीरंगोली

इक बिजली की नोंक
लगी ऊनी बादल को
उधड़ के तागा-तागा
बादल बरस गया...

- गुलज़ार

- इन्द्रजीत माँझी, पन्द्रह साल,
राष्ट्रीय बाल भवन, नई दिल्ली

दोस्तो,

बहुत शुक्रिया इतने सुन्दर और इतने सारे चित्रों के तोहफे के लिए। गुलज़ार साब के पसन्दीदा सात चित्र यहाँ पेश हैं। कुछ चुनिन्दा चित्र तुम अगले अंकों में मेरा पन्ना में भी देखोगे। इन सभी को उपहार में चकमक की सदस्यता या किताबें मिलेंगी।

चकमक, एकलव्य
ई-10, शंकर नगर, बीडीए कॉलोनी,
शिवाजी नगर, भोपाल, म.प्र. 462 016,
फोन: 9425010115

- मनीषा गुर्जर, तेरह साल, सवाईमाधोपुर, राजस्थान

- शिवम कुमार, तेरह साल, किलकारी बाल भवन, पटना

- विशेष अहीरवार, दसवीं, जवाहर बाल भवन, भोपाल

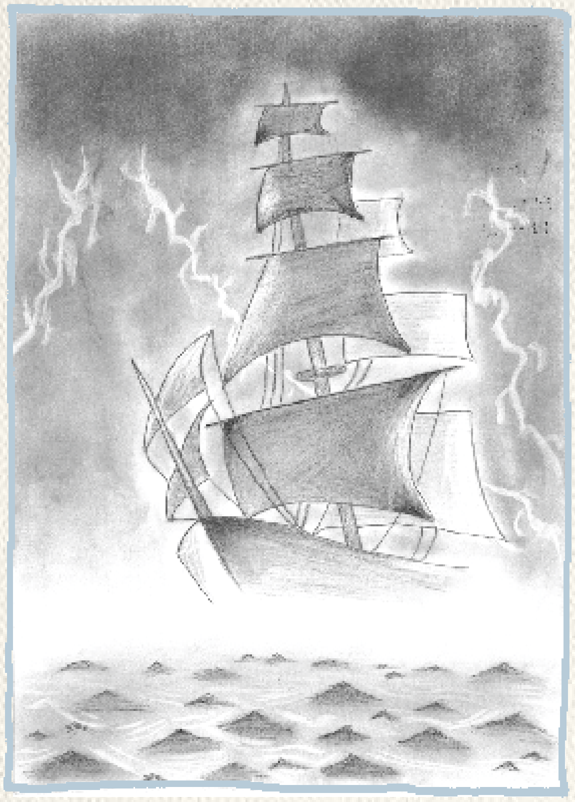

- रुद्राक्ष भाएरे, सातवीं, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल

अगस्त अंक के लिए दो कविताएँ हैं

जिस पर मन करे चित्र बनाओ।

हरे लगते हैं क्यों ये पेड़ बागों में
मेरे हाथों के तोते उड़ गए थे।

या

हवा सीटी बजाती है या पत्ते
या तोते छुप गए हैं पेड़ में जाके।

-गुलज़ार

- अपराजिता आशा, छठी,
डी.पी.एस पटना

हो सकता है बड़े तुमको कविताओं का अर्थ बताएँ। उनके अर्थ सुनो-समझो पर चित्र अपने मन का ही बनाना। कोशिश करना कि तुम्हारे चित्र हमें 15 जुलाई तक मिल जाएँ। चित्र के साथ अपना पता, कक्षा, फोन नम्बर ज़रूर लिखना।

- वंश, चौथी, डी.पी.एस लुधियाना

दोस्त

पाँचवीं किस्त

चित्रकल्पना : शशिकिरण

विशेष प्रस्तुति के बाद हम सामूहिक गीत गाते थे (ये अलग-अलग भाषा के गाने होते थे जिन्हें संगीत की टीचर चुनती थी कि कब कौन-सा गीत गाया जाएगा) कभी-कभी सामूहिक गीत के बाद हमारे प्रिंसिपल सर भाषण भी देते थे और फिर अन्त में राष्ट्रीय गान होता था। राष्ट्रीय गान सबको सावधान की मुद्रा में सीना तानकर गर्व के साथ गाना होता था। यह गाना मुझे अच्छा लगता था। वैसे मुझे पूरे गाने का मतलब पता नहीं था पर बताया गया था कि गुरु रवीन्द्रनाथ ने इसे रचा था और यह देशभक्ति से भरा हुआ गाना था। सबसे अच्छी बात यह थी कि गाना बड़ी तेज़ी-से चलता था और अपने आप ही याद हो जाता है। अकसर सड़क पर चलते लोग, साइकिल व ट्रक चालक भी रुककर राष्ट्रीय गान साथ में गाते थे। यह देखकर मुझे पूरा विश्वास हो गया था कि यह कुछ खास गाना है। और जब तक गाने की आखरी लाइन आती थी और सभी जय हे , जय हे गा रहे होते थे तो धूप में भी रोंगटे खड़े हो जाते थे ...

सभा के बाद सभी बच्चे कक्षा में अपनी-अपनी बैंच पे बैठ जाते थे। यूँ तो कक्षा में बदमाश और कम नम्बर लानेवाले को ही लास्ट बेंच पे बैठना पड़ता था, पर मुझे लम्बे होने के कारण हमेशा पीछे बैठना पड़ता था।

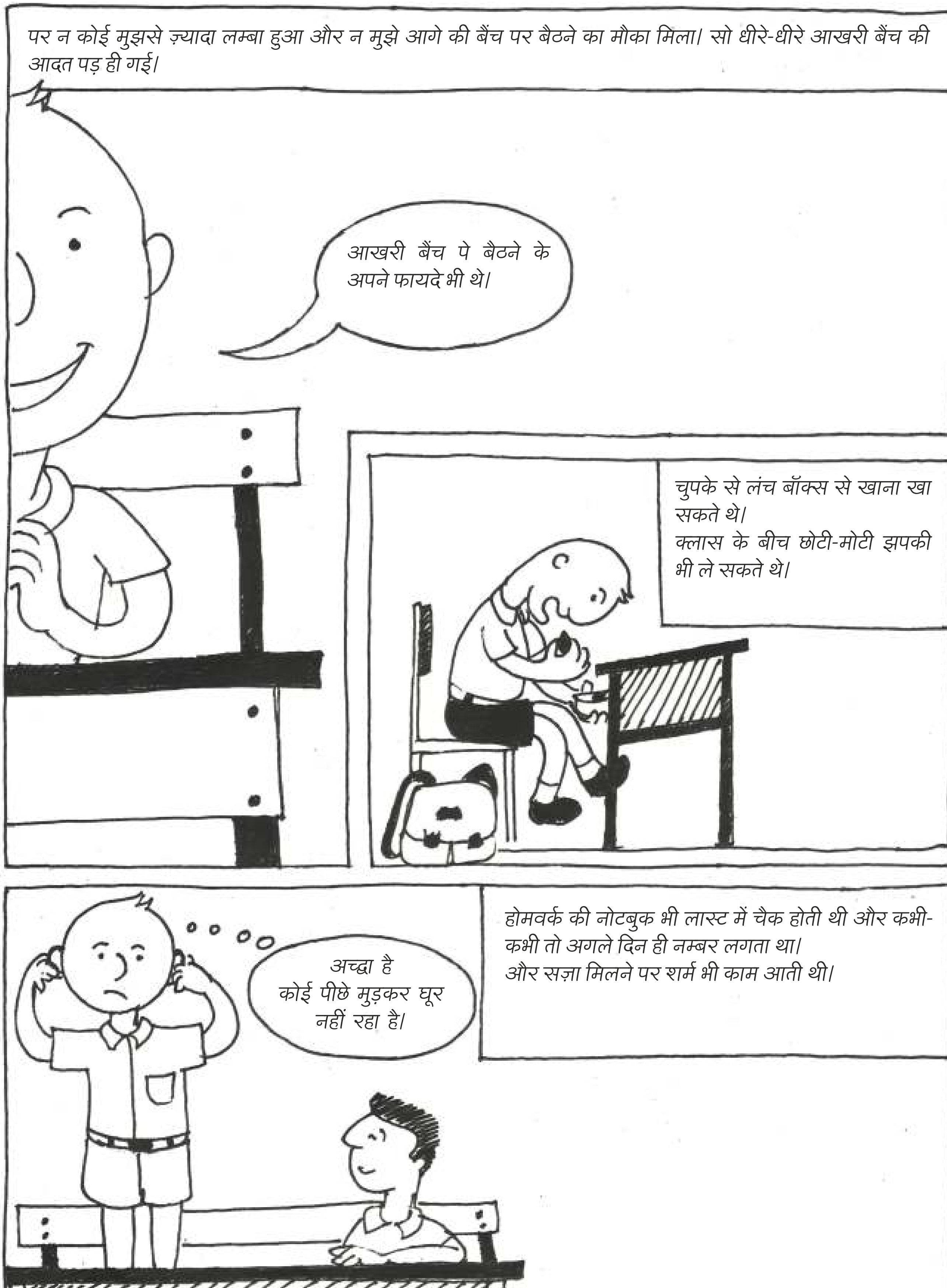

पर न कोई मुझसे ज़्यादा लम्बा हुआ और न मुझे आगे की बैंच पर बैठने का मौका मिला। सो धीरे-धीरे आखरी बैंच की आदत पड़ ही गई।
आखरी बैंच पे बैठने के अपने फायदे भी थे।
चुपके से लंच बॉक्स से खाना खा सकते थे।
क्लास के बीच छोटी-मोटी झपकी भी ले सकते थे।
अच्छा है कोई पीछे मुड़कर घूर नहीं रहा है।
होमवर्क की नोटबुक भी लास्ट में चैक होती थी और कभी-कभी तो अगले दिन ही नम्बर लगता था।
और सज़ा मिलने पर शर्म भी काम आती थी।

टीचर भी लास्ट बैंचवालों से सवालों के जवाब की उम्मीद कम ही रखते थे और इसलिए बचपन से ही क्लास में बैठे-बैठे ख्याली पुलाव पकाने का टाइम बहुत मिलता था।

वैसे तो कोई टीचर मुझे खास पसन्द नहीं करता था, पर ड्रॉइंग सर हमेशा मुझे चित्र बनाकर प्रतियोगिता में भेजने को प्रोत्साहित करते थे। इसलिए वे मुझे बहुत पसन्द थे और मैं बड़े मन से चित्र बनाता था ताकि मुझे सर से शाबाशी मिले।

इसी तरह सपने देखते-देखते समय बीत गया। हर साल की तरह फाइनल परीक्षा हुई और नतीजे का दिन भी आ गया। पर इस बार के नतीजों की वजह से सब कुछ बदलने वाला था। मैं तो पास हो गया पर गोविन्दो पास नहीं हुआ।

जारी

घोंसले पर डाका

संजय भारती

हमारे छोटे-से बगीचे में बहुत से किस्से होते रहते हैं। एक किस्सा सुनाता हूँ। कई किस्सों की तरह यह भी चुपचाप घट रहा था। फर्क सिर्फ यह हुआ कि उसे होते हमने देख लिया इसलिए वह हमारे पास चला आया।

पिछले दिनों हमारे यहाँ लकड़ी के फर्नीचर बनाने का काम हुआ। आम के एक पेड़ की छाँव में लगभग दो महीने काम चलता रहा। इस दौरान मेरा लगभग पूरा दिन बगीचे में बीतता। मार्च-अप्रैल की धूप से बचने के लिए मैं और मेरे कारीगर मित्र युधिष्ठिर आम के पेड़ की शरण में रहे। हमारे यहाँ छह-सात बड़े पेड़ हैं। और आसपास आम, जामुन, अमरूद, इमली, श्रीफल, पीपल, बरगद, नीम, सेमल, कदम्ब, अमलतास, शिरीष, सहजन आदि के खूब पेड़ हैं। हमारे बाग में हरी घास से भरा एक टुकड़ा है जहाँ बैठने पर चारों ओर पेड़ ही पेड़ दिखाई पड़ते हैं। युधिष्ठिर से हमारी सालों पुरानी पहचान है। खूब पटती है उनसे। वे हर मामले में बड़े नज़रदार हैं। बाग में अपना काम करते-करते उन्हें पता होता है कि कौन-सी चिड़िया ठीक किस वक्त आती है और क्या-क्या करती है। बीच-बीच में वे चिड़ियों के लिए दाने छींट देते हैं और फिर अपने काम में लग जाते हैं। हमारे बाग में गौरैया, सतभइया, मैना, बुलबुल, फाख्ता, कबूतर, कौवा, कोयल, बगुला, पीलक, फुलसुँघनी के अलावा दर्जनों छोटी-बड़ी अनजानी अनचीन्ही चिड़ियों का आना-जाना दिन भर लगा रहता है। और ढेर सारी गिलहरियों का तो वह बसेरा ही है।

आम के जिस पेड़ का ज़िक्र किया है उससे आठ-दस मीटर की दूरी पर नीम का एक ऊँचा पेड़ है। उस नीम पर कौवे के एक जोड़े ने अपना घोंसला बनाया। हमारी आँखों के सामने तिनका-तिनका जोड़कर वो दस-बारह दिनों में बना। कौवा आसपास ज़मीन पर फैली चीज़ों में से अपने काम की चीज़ चोंच में दबाकर उड़ता और उस डाल तक ले जाता जहाँ घोंसले की नींव रखी जा चुकी थी। कौवी उस डाल के आसपास बैठी रहती। कौवा जब कोई तिनका या झाड़ू की सींक, नारियल की रस्सी का टुकड़ा, लोहे की पतली तार या किसी छड़ का टुकड़ा, सूखी पतली डण्ठल वगैरह लेकर पहुँचता तो कौवी उसके पास आकर बैठ जाती। फिर दोनों अकसर एक-दूसरे से अपनी चोंच मिलाते या गर्दन घुमा-घुमा कर एक-दूसरे को निहारते। कौवों का वो जोड़ा जिस तरह से लगकर वह घोंसला बना रहा था, मुझे समझ आने लगा कि लगन किसे कहते हैं। हम दिनभर उनको तिनके ढूँढने, उन्हें ले जाने, उन्हें खोंसकर घोंसले के काम को आगे बढ़ाने में ही जुटा पाते। लोहे की कोई पतली छड़ जब कौवा अपनी चोंच में दबाए उड़ने की कोशिश करता तो हम अनुमान लगाते कि इसे लेकर वह उड़ नहीं पाएगा। लेकिन छोटी-छोटी उड़ानों के बाद वो उसे लेकर घोंसले तक पहुँच ही जाता। और हमारा अनुमान गलत साबित हो जाने पर हम सुकून में होते। कौवा उसे लेकर पहले छज्जे पर बैठता, फिर वहाँ से चार-पाँच हाथ ऊँची एक डाल पर, उसके बाद उसके ऊपर की डाल पर और आखिर में घोंसले तक पहुँचता। जो सामान हलका होता उसे एक ही उड़ान में घोंसले तक ले जाता। किसी सींक या काड़ी को अपने घोंसले में घोंसते हुए कौवे को देखने में बड़ा मज़ा आता। चोंच में काड़ी को दबाए पंख ज़रा-सा फैलाए हुए वह चोंच को हिलाता रहता। ऐसा करते समय उसका पूरा शरीर थिरकता रहता। उसकी वह थिरकन हम में रोमांच भरती।

कौवे ने जब तिनका जुगाड़ना बन्द कर दिया तो हमने मान लिया कि उनका घोंसला पूरा हुआ। इसी दरम्यान हमने देखा कि लगभग सारे पक्षी अपना घोंसला बनाने की जुगाड़ में लगे हुए हैं। बुलबुल ने हमारे बरामदे के पंखे पर कुछ तिनके लाकर रख दिए तो हमारी बेटी सारा ने घर में यह हिदायत दे दी कि वह पंखा अब न चलाया जाए।

अचानक एक दोपहर को युधिष्ठिर ने मेरा ध्यान उस ओर दिलाया। एक बगुला कौवों के घोंसलेवाली डाल पर बैठा

चित्रः दिलीप चिंचालकर

कुछ कर रहा था। बगुले के पंख सफेद थे और गर्दन के रोंएँ पीले। हम दोनों उसे देखने लगे। थोड़ी देर में समझ आ गया कि बगुला घोंसले से सींकें नोंच रहा है। एक सींक को उसने चोंच में दबाया और उड़ चला। चार-पाँच मिनट में वह फिर आया। उसने घोंसले से एक और सींक निकाली और उड़ गया। अब बगुला हर पाँच मिनट में आता और कौवे के घोंसले से एक सींक अपनी चोंच में दबाकर उड़ जाता। समझ आ गया कि बगुला कौवे के घोंसले से सींकें चुरा-चुराकर ले जा रहा है। हमने पत्नी यमुना, बेटे अपू और बेटी सारा को आवाज़ दी। वे सभी घर से बाहर बाग में आ गए।

हम देखते रहे और उस घटना पर बातें करते रहे। युधिष्ठिर ने कहा कि बगुले को ज़मीन से सींकें बटोरने में शायद खतरा लगता हो इसलिए अपने घोंसले के लिए वह इस तरह सींकें इकट्ठा करता है। यमुना ने कहा कि शायद कौवों ने इस घोंसले को त्याग दिया है और यह बात बगुला जानता है। मैंने बताया कि अभी दो दिन पहले तक मैंने उसमें कौवों को देखा है।

अचरज में डूबे हम अभी बातें कर रहे थे कि कौवा और कौवी अपने घोंसले में आ गए। कौवी घोंसले के भीतर पंख फैलाकर बैठ गई। यह देख युधिष्ठिर ने कहा, "कौवी जिस तरह पंख फैलाए बैठी है उससे लगता है, घोंसले में अण्डे भी हैं।" मैंने मन ही मन सोचा, अब तो बगुले को भी पता चल जाएगा कि कौवे अपने घोंसले में आ गए हैं। अब वह आने से रहा। मैं अभी सोच ही रहा था कि बगुला वापस आ गया और घोंसले से सटी डाल पर बैठ गया। कौवा और कौवी काँव-काँव करने लगे। बगुला उनकी ओर मुखातिब था। उसने अपने दोनों पंख फैला लिए और चोंच को इस तरह खोला जैसे कौवों को डरा रहा हो। कौवे वाकई डर गए और घोंसले से निकल दुबककर दूसरी डाल पर बैठ गए। अब उनके सामने ही बगुले ने घोंसले से एक सींक नोंच ली और उसे लेकर उड़ गया।

नीचे से हम देखनेवाले बोल पड़े, "अरे, यह तो डाका है। अभी तक तो चोरी हो रही थी, अब तो सीधे लूट।" फिर सोचा कि कौवे अब अपने बिरादरी को बुलाएँगे। बचपन से देखते आए हैं कि आफत-विपद में कौवों का झुण्ड जमा होकर काँव-काँव करता रहता है। तीस-चालीस कौवों के इकट्ठे होकर लगातार काँव-काँव करते रहने को जब भी देखा तो यही लगा कि वे अपना रोष प्रकट कर रहे हैं। खासकर उस समय जब किसी कौवे को बिजली के करंट का झटका लगा होता है और वह ज़मीन पर गिरकर तड़पता रहता है या कभी कोई कौवा एक ही झटके में मर गया होता है। लेकिन कभी-कभी कौवों का झुण्ड मानो पंचायती के लिए इकट्ठा हुआ होता है। किसी एक कौवे को कई कौवे बारी-बारी से मारते रहते हैं और ढेर सारे कौवे आसपास बैठ यह नज़ारा देखते हैं। ऐसे में लगता है जैसे पंचायत ने मार खानेवाले कौवे को सज़ा सुनाई हो।

बहरहाल, हमारे इस किस्से के कौवा-कौवी तो न अपनी बिरादरी को बुलाते और न बगुले के डाका डालने का कोई प्रतिवाद ही करते दिखे। वे दोनों पास के एक पेड़ पर जा चुपके से बैठ गए। बगुला थोड़ी-थोड़ी देर में आता रहा और घोंसले से एक-एक सींक नोंच-नोंचकर ले जाता रहा। हम अँधेरा हो जाने तक बगुले का कारनामा देखते रहे।

उस रात देर तक नींद नहीं आई। इन्तज़ार था कि कब सुबह हो और हम घोंसले को फिर देखें। पहली बार हमने किसी पक्षी को किसी दूसरे पक्षी का घोंसला उसके सामने उजाड़ते देखा था। बचपन में जिस बगुले से हम वरदान माँगा करते, मन में बसी उस छवि पर चोट लग रही थी। शाम को खेलकर जब हम बच्चों की टोली मैदान से लौटती तब बगुलों का झुण्ड भी अपने बसेरे पर लौटता दिखाई पड़ता। उनको देख हम आसमान की ओर सिर उठाए कहते – "बगुला-बगुला धान दे, चिनिया बादाम दे।" सुबह उठकर अपने नाखून देखते। जिसके नाखून पर चावल के दाने बराबर सफेद दाग दिख जाता वह सबको दिखाते फिरता कि बगुले ने उसे वरदान दिया है।

अगले दिन तड़के जग गया। अभी ज़रा-ज़रा सा उजाला हुआ था कि घोंसले को देखने बाहर निकला। उतनी सुबह बगुला वहाँ पहुँचा हुआ था। और उसी तरह सींक खींच रहा था। मैं देखता रहा। कल की ही तरह वह सींक लेकर जाता और पाँच मिनट में लौट आता। लेकिन कल से आज एक बात अलग हो रही थी – नीम के जिस पेड़ पर वह घोंसला था उससे थोड़ी दूर जामुन के एक पेड़ पर घोंसलेवाला वह कौवा बैठा था। बगुला जामुन के उस पेड़ की बगल से उड़ता हुआ आ-जा रहा था। बगुला जब भी जामुन के पेड़ के पास से गुज़रता उस पर बैठा कौवा उसे रगेदता हुआ उसकी ओर झपटता। बगुला तेज़ी से अपनी दिशा बदल लेता। ऐसा पाँच-सात बार होने के बाद बगुले ने घोंसले तक आने-जाने की अपनी दिशा बदल ली। दोपहर तक घोंसला पूरी तरह लूटा जा चुका था।

बगुला जब सींकें खींच-खींचकर ले जा रहा था, कुछ सींकें फिसलकर नीचे ज़मीन पर गिर गई थीं। शाम को देखा – कौवा उन बिखरी काड़ियों में से एक-एक को अपनी चोंच में दबाए पास के सेमल के पेड़ पर ले जाकर जमा रहा है।

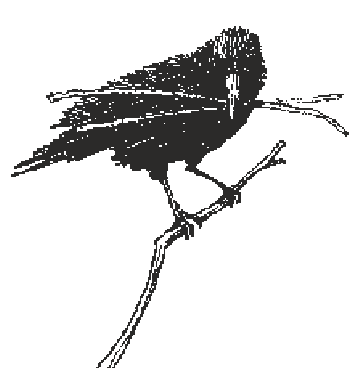

अनवर मियाँ की रोटी

दामोदर अग्रवाल

क्या चटपटी बनाई अनवर मियाँ की रोटी
हम सबने मिलके खाई अनवर मियाँ की रोटी

झोले में भरके आया गेहूँ का ताज़ा आटा
महमूद लाए आलू रोमी ने उनको काटा
कूकर के घर से बढ़िया अरहर की दाल पकाई
जाके बाज़ार झट से ले आए हम मलाई
उपले में रख पकाई अनवर मियाँ की रोटी
हम सबने मिलके खाई अनवर मियाँ की रोटी
क्या चटपटी बनाई अनवर मियाँ की रोटी

अनवर मियाँ की रोटी बिकती है आने-आने
ले-ले के अपनी प्लेटें आते हैं लोग खाने
खाली पड़ी हैं देखो बाकी सभी दुकानें
रोटी खरीदने को मुझको भी भेजा माँ ने
क्या खूब है गदराई अनवर मियाँ की रोटी
क्या चटपटी बनाई अनवर मियाँ की रोटी
हम सबने मिलके खाई अनवर मियाँ की रोटी

चकमक

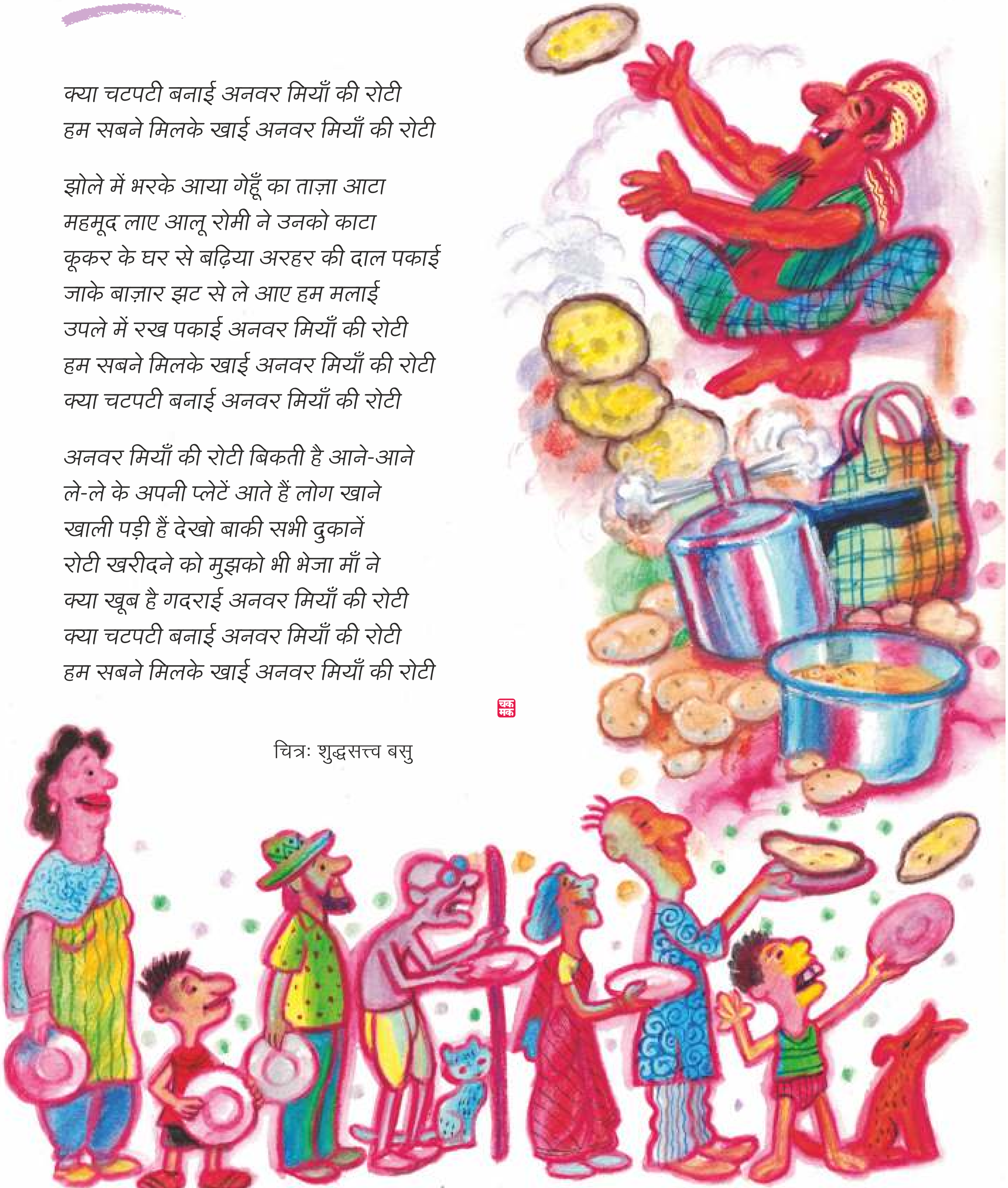

चित्रः शुद्धसत्त्व बसु

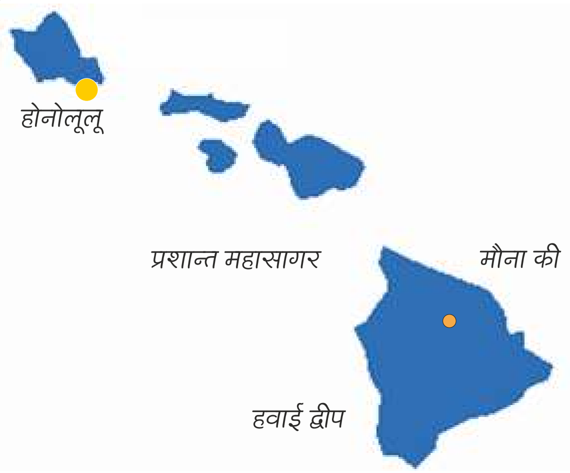

थर्टी मीटर टेलिस्कोप

विवेक सोले

संयुक्त राज्य अमेरिका के हवाई द्वीप में एक बेहद उन्नत और शक्तिशाली ऑप्टिकल टेलिस्कोप तैयार हो रहा है। जब यह तीस मीटर टेलिस्कोप (टीएमटी) पूरा हो जाएगा तब यह लगभग हमारे समय की शुरुआत के पास तक का देख पाएगा। टीएमटी मौजूदा ऑप्टिकल टेलिस्कोप की तुलना में नौ गुना बड़ा होगा और उससे तीन गुना अधिक स्पष्ट तस्वीरें ले सकेगा। यह परियोजना पाँच देशों अमेरिका, कनाडा, जापान, चीन और भारत के शैक्षणिक संस्थानों और वैज्ञानिकों के बीच सहयोग का नतीजा है।

मौना हवाई द्वीप पर एक सुप्त ज्वालामुखी है। समुद्र तल से 4,205 मीटर (13,796 फीट) ऊपर। यह अमेरिका में सबसे ऊँची जगह है।

1609 में गैलिलियो ने अपने पहले छोटे-से टेलिस्कोप से बृहस्पति के चन्द्रमाओं की खोज की थी। टेलिस्कोप की ताकत (पावर) आँकने के लिए दो ही मापदण्ड ज़रूरी हैं। एक, यह किसी वस्तु को कितना बड़ा दिखा सकता है और दूसरा, यह कितनी धुँधली रोशनी को पकड़ सकता है। खगोलीय दूरबीन एक बालटी जैसी है जिसमें अन्तरिक्ष में सुदूर तारों से निकले फोटोन को पानी की बूँदों की तरह इकट्ठा करना होता है। जितनी बड़ी बालटी उतने ज़्यादा फोटोन और उतनी स्पष्ट तस्वीर। गैलिलियो की बालटी यानी उसकी दूरबीन के लैंस का व्यास सिर्फ 37 मिलीमीटर था।

शक्तिशाली दूरबीन बनाने के लिए कॉन्वेक्स (उत्तल) लैंस को एक सीमा तक ही बड़ा बना सकते हैं। कॉन्वेक्स लैंस बीच में मोटा होता है। बड़ा लैंस ज़्यादा वज़नी होता है और उसे बनाने में कई मुश्किलें आती हैं। उसकी जगह कॉन्केव मिरर (अवतल दर्पण) का उपयोग हुआ और अब तक 8 मीटर व्यास की दूरबीन बन चुकी है।

8 मीटर व्यास का दर्पण बनाना भी आसान काम नहीं है। आकार के साथ इसका वज़न ज़्यादा हो जाता है। टूटने का डर अलग रहता है। इसको लाना-ले जाना भी आसान नहीं होता। सतह की विकृति भी आकार के साथ बढ़ सकती है जिससे छवि की स्पष्टता प्रभावित होती है। तुमने देखा होगा कि खराब गुणवत्ता के दर्पणों में चेहरा मोटा-पतला या टेढ़ा-मेढ़ा दिखता है। यह निर्माण के समय आई सतह की विकृति के कारण होता है। अगर दर्पण बहुत बड़ा हो तो खुद के वज़न के कारण भी थोड़ा विकृत हो जाता है और इस पर बना प्रतिबिम्ब भी।

पर समस्या यह है कि ब्रह्माण्ड में दूर तक देखने के लिए इससे भी कहीं बड़ी दूरबीन की ज़रूरत होती है। और 30 मीटर के बड़े दर्पण का निर्माण लगभग असम्भव है। वर्तमान में सबसे बड़ी दूरबीन, Large Binocular Telescope (LBT) में 8.4 मीटर व्यास के दो प्राथमिक दर्पण हैं।

एक बड़े दर्पण की जगह छोटे दर्पण के कई टुकड़ों (segmented mirror) का उपयोग करके एक बड़ा दर्पण बनाना ही इसका समाधान है। इस तकनीक से बने स्पेन में स्थित ग्रान टेलिस्कोप में 36 षट्कोणीय (हेक्सागोनल) दर्पणों को जोड़कर 10.4 मीटर का एक दर्पण तैयार किया गया है। और अब इसी तरीके से एक बहुत बड़े 30 मीटर टेलिस्कोप का निर्माण हो रहा है। यह लगभग 1.5 मीटर के 492 छोटे दर्पणों से बनेगा।

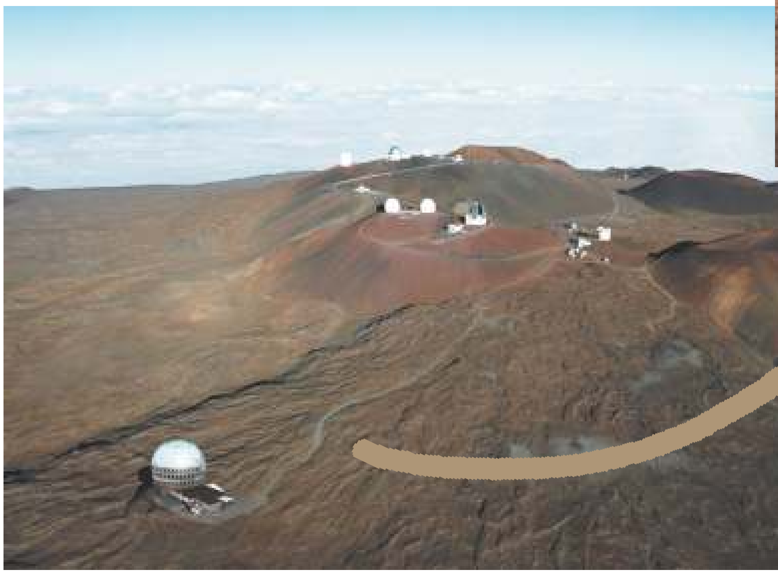

यहाँ एक और बात बताना ज़रूरी है। खगोलीय दूरबीन एक टाइम मशीन की तरह काम करती है। विज्ञान कथा पर आधारित "स्टार वॉर्स" श्रृंखला की सभी फिल्मों में सबसे पहले स्क्रीन पर आनेवाला वाक्य होता है *A long time ago in a galaxy far-far away....*। यह एक तरह से अटूट सत्य है। प्रकाश बहुत तेज़ लेकिन सीमित गति से चलता है। 300,000 किलोमीटर प्रति सेकण्ड। सूर्य से हम तक पहुँचने में प्रकाश को लगभग आठ मिनट लगते हैं। यानी सूर्य को हम वैसा देखते हैं जैसा वह 8 मिनट पहले था। पास के तारे से प्रकाश लगभग चार वर्ष में हम तक पहुँचता है लेकिन सुदूर आकाशगंगाओं से पहुँचने में अरबों साल लग जाते हैं। सारी गणनाओं के अनुसार हमारा ब्रह्माण्ड 14 अरब साल पहले बिग बैंग (महाविस्फोट) से शुरू हुआ था। समय भी यहीं से शुरू हुआ था। समय में पीछे चलते हुए हम यह भी पता लगा पाएँगे कि सबसे पहली आकाशगंगाओं ने कब जन्म लिया। दूसरे तारों के आसपास चक्कर लगाते हुए पृथ्वी जैसे ग्रहों को भी देखना सम्भव हो सकेगा। ब्रह्माण्ड का 90 प्रतिशत हिस्सा कोल्ड डार्क मैटर (cold dark matter) से बना है। माना जाता है कि ब्रह्माण्ड का 80 प्रतिशत हिस्सा कोल्ड डार्क मैटर है। यह तारों की तरह चमकता नहीं है लेकिन इसका गुरुत्वाकर्षण महसूस किया जा सकता है। इस कोल्ड डार्क मैटर के अस्तित्व के बारे में वैज्ञानिकों का एक मत नहीं है। इसकी गुत्थी को सुलझाने में भी यह TMT मदद कर सकता है।

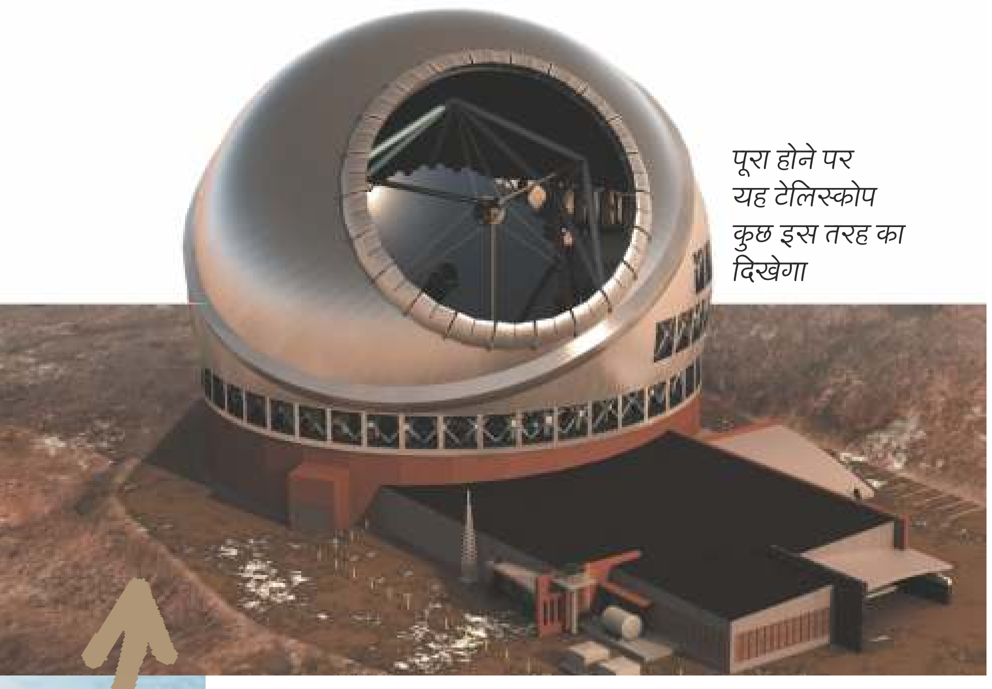

पूरा होने पर यह टेलिस्कोप कुछ इस तरह का दिखेगा

इसमें कोई शक नहीं कि 2020 में जब तीस मीटर की यह दूरबीन काम करने लगेगी तो सौर मंडल के बाहर के ग्रहों की खोज में क्रांतिकारी परिवर्तन लाएगी। पर हवाई के स्थानीय लोग इस दूरबीन के लगाए जाने का विरोध कर रहे हैं। उनका कहना है कि यह दूरबीन जिस पर्वत पर लगाई जा रही है वह हवाई आदिवासियों के लिए पवित्र स्थान है। इस विरोध को देखते हुए हवाई के गवर्नर ने निर्माण कार्य पर रोक लगा दी थी ताकि खगोलशास्त्रियों और आदिवासियों के बीच बातचीत हो सके। पर हाल ही में एक समझौता हुआ है जिसके तहत हवाई आदिवासी यह दूरबीन लगाने देंगे बशर्ते बाकी सारी दूरबीनें हटा ली जाएँ।

(स्रोत से साभार)

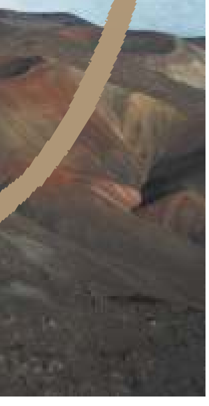

अभी हाल ही में हबल, केक और स्पित्ज़र दूरबीन की मदद से EGS-zs8-1 नाम की आकाशगंगा खोजी गई। यह हमसे 13.1 अरब प्रकाश वर्ष की दूरी पर है। उस समय ब्रह्माण्ड केवल 67 करोड़ वर्ष का था। बिग बैंग के लगभग 20-30 करोड़ साल के बाद पहले-पहले तारे बनना शुरू हुए। बिग बैंग और तारों के बनने के बीच के समय के बारे में हमारी जानकारी अभी भी आधी-अधूरी है। TMT की मदद से कुछ और रहस्य सुलझेंगे।

भारत का योगदान

TMT के बनने में भारत की भागीदारी बेहद अहम है। सॉफ्टवेयर सिस्टम, सेंसर और चालक मोटर (actuators) के उत्पादन में भारत का महत्वपूर्ण योगदान रहेगा। दर्पण को पकड़ने के ढाँचे का निर्माण अवर्सला इंजीनियरिंग बंगलुरू में हो रहा है। दर्पण का प्रत्येक खण्ड तीन प्रवर्तकों द्वारा संचालित किया जाएगा। कुल मिलाकर 1476 प्रवर्तकों का गठबन्धन खण्डों को अपनी जगह बनाए रखेगा। प्रत्येक खण्ड के बीच छोटी-सी भी दरार नहीं चल सकती।

अडेप्टिव ऑप्टिक्स की मदद से बाईं तरफ के तारों के धुँधले चित्र को स्पष्ट (दायाँ चित्र) देखा जा सकता है।

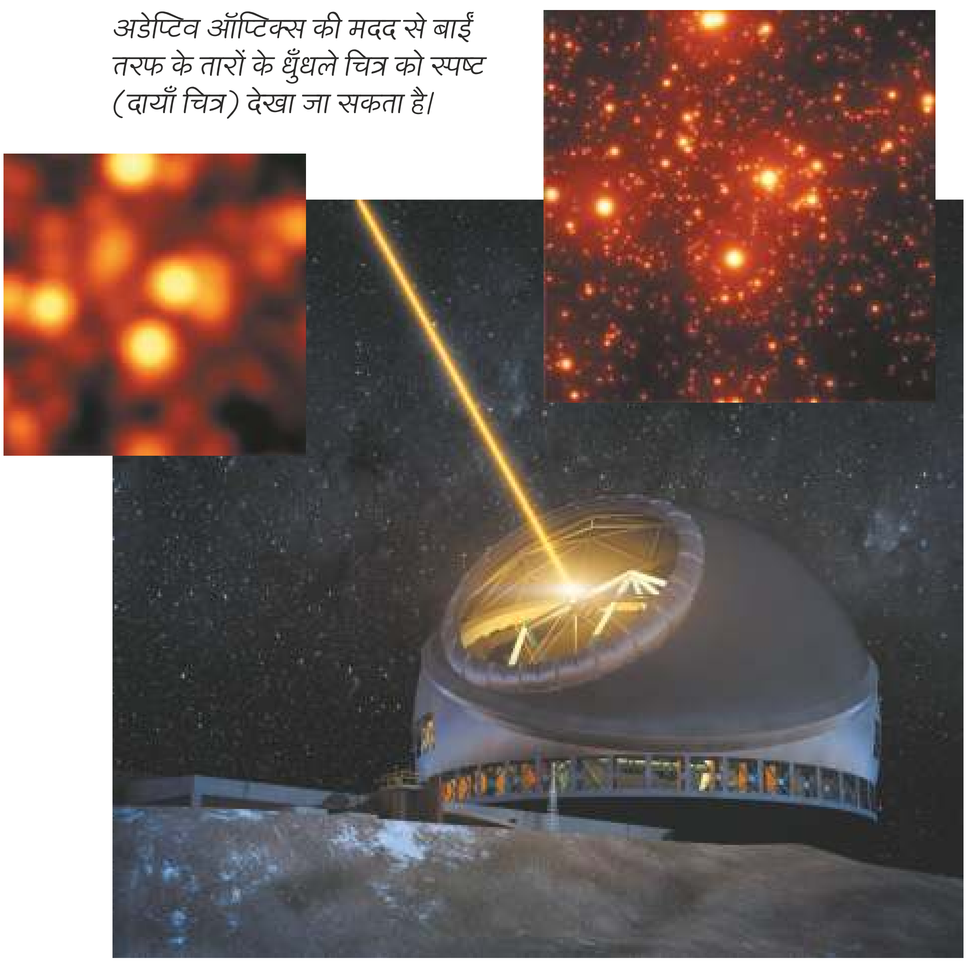

अडेप्टिव ऑप्टिक्स

पृथ्वी से आसमान के तारे देखने में वायुमण्डल एक बड़ी समस्या खड़ी करता है। तापमान के बदलते रहने से और हवा के बदलते घनत्व के कारण तारे टिमटिमाते हुए दिखते हैं। इस प्रभाव को दूर करने के लिए या तो दूरबीन को वायुमण्डल के ऊपर अन्तरिक्ष (हबल टेलिस्कोप) में स्थापित करके तारों को स्पष्ट देखा जा सकता है या फिर पृथ्वी पर बहुत ऊँचे, सूखे, ठण्डे और शान्त वातावरण में दूरबीन लगाई जा सकती है। इस के लिए टीएमटी बोर्ड ने हवाई द्वीप पर "मौना की" को चुना। यह एक 4,205 मीटर ऊँचा सुप्त ज्वालामुखी है।

हवाई द्वीप इसके लिए सबसे मुफीद जगह है। आसमान तक पहुँचने की अनुमति देने के लिए खगोलविद हवाई लोगों के बहुत आभारी हैं। पिछले 50 सालों में लगभग हर बड़ी खगोलीय सफलता में हवाई द्वीप की दूरबीनों का योगदान रहा है।

इतनी ऊँचाई पर भी वायुमण्डल पूरा शान्त नहीं रहता। उसमें उथल-पुथल होती रहती है। कम्प्यूटरों की मदद से इससे निपटने का एक तरीका और मिल गया है जिसे अडेप्टिव ऑप्टिक्स कहते हैं। आसमान की तरफ एक लेज़र बीम भेजी जाती है। उसमें आए बदलाव को कम्प्यूटर नाप लेता है और वैसे विपरीत बदलाव दूरबीन के दर्पण में कर दिए जाते हैं। ऐसा करने से आसमान की बहुत ही साफ तस्वीर देखी जा सकती है। एक तरह से दूरबीन को कम्प्यूटरकृत चश्मा लगा दिया जाता है।

2020 तक TMT के पूरा होने की उम्मीद है। वैसे, ब्रह्माण्ड की शुरुआत को देखने के लिए इतना इन्तज़ार तो बनता ही है...है न

(इस के बारे में और जानकारी यहाँ से प्राप्त की जा सकती है –

Website: www.tmt.org

Facebook page: https://www.facebook.com/TMTHawaii)

पिछले माह की पहेली का हल

भास्कराचार्य भारत के एक महान गणितज्ञ थे। उनकी लड़की का नाम लीलावती था। जिसका वर चुनने के लिए उन्होंने एक पहेली का सहारा लिया। उन्होंने अपने तीन नौजवान छात्रों को बुलाया जो लीलावती से शादी करना चाहते थे। उन्होंने तीनों को पाँच गोटियाँ दिखाईं – तीन काली और दो सफेद।

फिर तीनों की आँखों पर पट्टी बाँधी गई। तीनों के पीछे रखे मेज़ पर बिना देखे कोई एक गोटी रख दी गई। तीनों को उनके पीछे रखी गोटी का रंग बताना था। सबसे पहले, पहले व्यक्ति की आँख की पट्टी खोली गई। नियम ये था कि वो अपने पीछे रखी हुई गोटी को नहीं देख सकता था पर बाकी दोनों के पीछे रखी हुई गोटियों को देख सकता था। पहले व्यक्ति ने बहुत दिमाग लगाया पर वो बता नहीं पाया कि उसके पीछे कौन-से रंग की गोटी रखी है। लिहाज़ा उसे उसके पीछे रखी गोटी के साथ कमरे से बाहर कर दिया गया। जब दूसरे व्यक्ति की पट्टी खोली गई तो उसने तीसरे व्यक्ति की गोटी देखी। पर वह भी अपनी गोटी का रंग बता नहीं पाया। तो उसे भी उसकी गोटी के साथ बाहर कर दिया गया।

यह सुनते ही तीसरे व्यक्ति ने बिना पट्टी खोले ही अपने पीछे रखी गोटी का रंग बता दिया। क्या तुम बता सकते हो कि उसने अपनी गोटी का रंग कैसे पता किया?

इस पहेली की हल को करने में पसीना और मज़ा दोनों आए।

कुल पाँच गोटियाँ हैं – तीन काली और दो सफेद।

अब इनकी सभी सम्भव जमावटें देखें।

काली	काली	काली
काली	काली	सफेद
काली	सफेद	सफेद
काली	सफेद	काली
सफेद	काली	काली
सफेद	सफेद	काली
सफेद	काली	सफेद

पहले व्यक्ति ने आँखों की पट्टी खोली और देखा –

काली	काली	काली
काली	काली	सफेद
काली	सफेद	सफेद
काली	सफेद	काली
सफेद	काली	काली
सफेद	सफेद	काली
सफेद	काली	सफेद

यानी

काली काली

काली सफेद

सफेद काली

सफेद सफेद

अगर उसे दूसरे और तीसरे व्यक्ति दोनों के पीछे सफेद गोटी दिख जाती तो वह आसानी से बता सकता था कि उसके पीछे काले रंग की गोटी होगी। क्योंकि सफेद गोटी तो कुछ दो ही थीं। पर वह नहीं जान सका यानी –

काली काली

काली सफेद

सफेद काली में से कोई क्रम उसे दिखा होगा। दूसरे व्यक्ति के बारे में सोचिए –

- उसे सम्भव जमावट के हिसाब से काली या सफेद गोटी ही दिख सकती है।
- अगर उसे सफेद दिख जाती तो वह इस जमावट के हिसाब से बता सकता है कि
- तीसरे व्यक्ति के पास अगर सफेद गोटी है तो उसके पीछे काली होगी।
- पर वह नहीं बता सका क्योंकि उसे तीसरे व्यक्ति के पीछे काली गोटी दिखाई दी होगी।
- यानी उसके पीछे सफेद और काली कोई भी गोटी हो सकती है। यही बात तीसरे युवक को पता चल गई थी। और इसलिए उसने कहा कि वह बिना आँखें खोले ही बता सकता है कि उसके पीछे कौन-सी गोटी है।

पंजाबी बाल उपन्यास

(सातवीं किस्त)

किरली का पहुँचना एक अजनबी गाँव में

जसबीर भुल्लर

कई बार किरली मगरमच्छ उस रास्ते के पास छिपकर लेटी रहती थी जिस रास्ते से जानवर पानी पीने आते थे। इस समय उसे शिकार करने का यही तरीका अच्छा लगा। वह पगडण्डी के पास, झाड़ियों के नीचे पत्थर की तरह बिना हिले-डुले लेट गई। उसने एक हिरण शावक को पानी की ओर आते देखा। यानी हिरणों का झुण्ड कहीं पास ही घास चर रहा था। हिरण का बच्चा भटककर इस ओर आ गया था। शावक की चमड़ी उसके दाँतों के लिए सख्त नहीं थी। वह उसे आराम से खा सकती थी।

हिरण शावक इस संकट से अनजान धीरे-धीरे पानी की तरफ आ रहा था। किरली मगरमच्छ पहले पेट के बल रेंगकर दबे पाँव उसकी तरफ बढ़ी और फिर इतनी ज़ोर-से अपनी पूँछ उसे दे मारी कि वह लुढ़कता हुआ पानी में जा गिरा।

छपाक!

पानी एक बार उछला और फिर शान्त हो गया।

किरली मगरमच्छ ने माँस को अच्छी तरह चबाया और फिर नन्हे मगरमच्छों के खाने को उगल दिया। वे सब के सब एक दूसरे को धकेलते हुए माँस पर टूट पड़े।

नन्हे मगरमच्छ धीरे-धीरे बड़े हो रहे थे। कुछ दिनों से वे माँस खाने के आदी हो गए थे। पर अभी इतने बड़े नहीं हुए थे कि खुद माँस को चबा सकें। उसके लिए यह काम किरली को करना पड़ता था।

एक ही जगह पर इतने मगरमच्छों की कुलबुलाहट भली लग रही थी। अपने बच्चों को निहारती किरली अचानक चौंक पड़ी। उसे लगा कि नन्हे मगरमच्छ संख्या में उतने नहीं हैं जितने अण्डों से निकले थे। किरली को गिनना नहीं आता था। हो सकता है यह किरली का वहम ही हो!

नदी में दूसरे मगरमच्छ भी मौका देखकर छोटे मगरमच्छों को खा जाते थे। पर यहाँ तो कोई बाहरी मगरमच्छ नहीं था। किरली ने कुछ देर बाद इस बात को नज़रंदाज़ कर दिया। झाड़ियों की ओट में एक कछुआ कहीं से आकर रहने लगा था। किरली मगर का खतरा भूलकर वह नन्हे मगरमच्छों की तरफ दौड़ा। और उन्हें दबोच लिया। किरली ने यह देखा और गुस्से से आगे बढ़कर उसने कछुए को घेर लिया। कछुआ उसकी दुम के पहले वार से ही चित हो गया। उस दिन किरली ने उस मोटे-ताज़े कछुए को खाकर अपना पेट भरा। अगले दिन वो निश्चिन्त होकर पानी में तैर रही थी। कुछ दूर एक चील पेड़ पर घात लगाए बैठी थी। किरली को चील के वहाँ होने का पता नहीं था। चील के पंखों की फड़फड़ाहट कानों में पड़ी तो उसने चौंककर आँखें खोलीं। चील एक नन्हे से मगरमच्छ को पंज़ों में दबोचकर उसकी आँखों के सामने ही उड़ गई। किरली अपने बच्चे को आँखों से यूँ ओझल होते देखती रही। वह किनारे की तरफ आई और बेबसी से कीचड़ में पूँछ पटकने लगी।

उस दिन वह उदास रही। रात हुई तो उसने अपने सब लाड़लों को पास बुलाकर पूँछ के घेरे में बैठा लिया। उनकी रखवाली करने का अब यही तरीका था। अब बड़े होने तक मगरमच्छों का बचाव किरली की ताकत और चौकसी से ही हो सकता था।

उस रात आकाश में घने बादल थे। बिजली कड़की और फिर किनमिन (बूँदाबाँदी) होने लगी। आमतौर पर मादा मगरमच्छ सूखे मौसम में अण्डे देती थी। अण्डों से जब बच्चे निकलते थे तब तक बारिश शुरू हो जाती थी। बारिश में केंचुए, सुंडियाँ और तरह-तरह के कीड़े-मकौड़े पैदा हो जाते थे जो छोटे मगरमच्छों का भोजन बनते थे।

इस बार बारिश कुछ देर से आई थी। लेकिन किरली का बसेरा एकदम सही जगह पर होने से बच्चों को भोजन मिल पा रहा था। बादल एक बार फिर गरजे और बारिश तेज़ हो गई। किरली और उसके बच्चे बारिश में भीगते रहे। कभी-कभार बिजली चमकती तो उनके शरीर चमक उठते। अचानक एक भयानक आवाज़ वातावरण में फैल गई। यह आवाज़ न तो बिजली कड़कने की थी और न बादल के फटने की। घरौंदों में छिपे जानवरों ने चौंककर सिर ऊपर उठाया और सहमकर फिर टाँगों में छिपा लिया। घोंसलों में भीगे पंछियों ने पंख फड़फड़ाए।

ऐसी आवाज़ किरली मगर ने पहले भी सुन रखी थी। इससे पहले कि वह इस आवाज़ को समझ पाती बाढ़ उन तक पहुँच चुकी थी। पानी का बहाव तेज़ था। नन्हे मगरमच्छ अब तक खुद को सम्भाल पाने के काबिल नहीं हुए थे। किरली मगर के पैर भी बाढ़ की मार के सामने उखड़ गए। पहले उसने पैर जमाने की कोशिश की और फिर शरीर ढीला छोड़ दिया। किरली मगरमच्छ ने सोचा कि नन्हे मगरमच्छ पास ही बहे आ रहे होंगे। जब बहाव कुछ कम होगा तो वह उन्हें सम्भाल लेगी। इसीलिए न तो उसने पानी के बहाव के विपरीत जाने की कोशिश की और न ही रुकने का ही कोई खास यत्न किया।

वह बहती गई, बहती गई।

अचानक किरली को लगा कि पानी उतर गया था। वह पहले की तरह बह नहीं रही थी। बल्कि जूँ की गति से सरक रही थी। उसने आँखें खोलीं। चारों ओर पानी ही पानी था। एक पल के लिए उसे विश्वास ही नहीं हुआ। पानी उसे बहाकर फिर से नदी में ले आया था।

किरली मगरमच्छ ने पूँछ पटक-पटक कर खूब पानी उछाला और खुशी से तैरने लगी। अचानक वह ठिठककर रुक गई। उसे नन्हे मगरमच्छों का ख्याल आया। उसने घबराकर इधर-उधर देखा।

नन्हे मगरमच्छ कहीं नहीं थे।

....

पानी जैसे चढ़ा था वैसे ही उतर भी गया। बाढ़ के कारण नदी के किनारे कीचड़ से भर गए थे। किरली मगरमच्छ कीचड़ में अकेली लेटी हुई थी। उसके इर्द-गिर्द नन्हे मगरमच्छों की भीड़ नहीं थी। वह एक बार आबाद होकर फिर से उजड़ गई थी। उसने किनारे के साथ-साथ दूर तक छोटे मगरमच्छों को ढूँढने की कोशिश की, लेकिन सब व्यर्थ। पानी का बहाव उन्हें बहाकर पता नहीं कहाँ ले गया था। किरली उदास हो गई।

मग्घू मगरमच्छ एक बार बाढ़ में बहकर उसे फिर कभी नहीं मिला। वह जान गई थी कि उसके बच्चे भी उसे नहीं मिलेंगे।

उस समय किरली मगरमच्छ का मन रोने को हो आया, पर इस दुख के समय वह रो नहीं सकती थी। मगरमच्छों की आँखों में आँसू कहाँ आते थे! लोगों ने यूँ ही उन पर मुहावरे बनाए हुए थे। उसने

सभी चित्र : अतनु राय

निढाल होकर कीचड़ से सिर टिका दिया। उस समय बारिश रुकी हुई थी। हालाँकि आसमान में बादल अब भी जमे हुए थे।

वह देर तक कीचड़ में पड़ी रही। अचानक किसी के पैरों की आहट सुन उसने आँखें खोलीं। एक भैंस धीरे-धीरे नदी की ओर बढ़ रही थी। उसके पैर कीचड़ में छड़प्-छड़प् की आवाज़ कर रहे थे। नदी में घुसकर भैंस ने पानी का लम्बा घूँट भरा और फिर मुँह ऊपर उठाया। उसके मुँह से पानी टपक रहा था। वह इसी तरह कुछ पानी पीती और कुछ उसे मैला करती नदी के भीतर तक चली गई।

किरली निश्चल पड़ी भैंस को देखती रही। उसका मन बुझा-बुझा-सा था। पर भोजन के लगातार सामने होने से उसकी भूख जाग उठी। कल दिन में बड़े कछुए को खाने के बाद उसने एक कौर तक नहीं निगला था। कुछ देर के लिए वो अपना दुख भूल गई। और चुपचाप पेट और पैरों के बल नदी की ओर रेंगने लगी।

पानी पीने के बाद भैंस नदी में नहाने का मज़ा लेने लगी। उसने आँखें मूँद ली थीं और मुँह को पानी से ऊपर उठा रखा था ताकि साँस ले सके। उसके शरीर का बाकी हिस्सा पानी में डूबा हुआ था।

इस समय भैंस का शिकार करना किरली के लिए बहुत आसान था। पास पहुँचकर उसने भैंस के मुँह पर ज़ोर-से पूँछ दे मारी। और मुड़कर उसके मुँह को अपने जबड़ों में जकड़कर पानी के अन्दर खींच लिया।

कुछ देर तक पानी में हलचल हुई और फिर सब शान्त हो गया। नदी के गन्दले पानी में भैंस का खून घुल रहा था। धीरे-धीरे खून की लालिमा नदी के पानी में घुलकर हलकी हो गई।

किरली मगरमच्छ ने पेट भरकर भोजन किया। फिर भैंस के बाकी बचे हिस्से को खींचकर किनारे के पास रख दिया ताकि वह मछलियों से बचा रहे। अगले खाने के लिए अब उसके पास पर्याप्त भोजन था।

इससे फारिग होकर किरली एक बड़े-से पत्थर पर लेट गई। किनारे पर रखा यह पत्थर गाँव के लोगों के कपड़े धोने की जगह थी। मौसम खराब होने के कारण आज घाट सूना था।

रतन और बचना गड़रिए अपने में मग्न बैठे बारहखड़ी का खेल खेल रहे थे। उनके मवेशियों का झुण्ड घास में मुँह मारता इधर-उधर फैल गया था। पाली खत्म हुई तो उन्होंने पशुओं को हाँक के एक जगह पर इकट्ठा कर लिया। झुण्ड पर नज़र डाली तो एक भैंस कम थी। बचना ने पेड़ पर चढ़कर चारों ओर देखा। भैंस कहीं नहीं दिखी। वह निराश होकर नीचे उतर आया।

"पानी पीने चली गई होगी शायद!" रतन ने कहा, "चल, घाट की ओर जाकर देखते हैं।"

दोनों नदी की ओर चल दिए।

नदी के पास पहुँचे तो बचना ने रतन को बाँह पकड़कर रोक लिया। उसने पानी में अधखाई पड़ी भैंस को देख लिया था। अभी वे हैरान से वहीं खड़े थे कि उनकी निगाह पत्थर पर लेटी किरली मादा मगर पर पड़ा। उन्हें पूरी कहानी समझते देर नहीं लगी। वे घबराहट में वहाँ से बेतहाशा भागे।

और पशुओं के झुण्ड को गाँव लौटा ले गए।

उस समय उनका बापू चौपाल में बैठा था। दोनों भाइयों को इतनी जल्दी लौटता देखकर वह हैरान हुआ। वो मन ही मन बोला, "राम भली करें।"

रामरतन और बचना घबराए हुए थे।

वह उठकर खड़ा हो गया, "क्या हो गया?"

"बापू! हमारी भैंस को मगरमच्छ ने मार डाला।" दोनों एक साथ बोल उठे।

"कभी न आगे, न पीछे, अब नदी में मगरमच्छ कहाँ-से आ गया?" चौपाल में बैठे लोगों को रतन और बचना की बात पर यकीन नहीं हुआ। वे दोनों से तरह-तरह के सवाल पूछने लगे।

क्षण भर में ही खबर पूरे गाँव में फैल गई थी।

अगले अंक में जारी

कीकर और पलाश की पहेली

यह कहानी मेरे गाँव हापुड़ की है। करीब दस साल पहले वहाँ कीकर का एक घना जंगल था। उस जंगल में 99 प्रतिशत कीकर के पेड़ थे और 1 प्रतिशत पलाश के। एक बिल्डर की निगाह उस जंगल पर थी। वो वहाँ कई बहुमंज़िला मकान बनाना चाहता था। उसने हापुड़ की ग्राम सभा में एक प्रस्ताव रखा कि इन मकानों के कारण गाँव के बहुत सारे लोगों को रोज़गार मिलेगा। और वैसे भी हम सिर्फ कीकर के पेड़ काटेंगे। वो भी इतने कि काटने के बाद जंगल में कीकर के 98 प्रतिशत पेड़ बचे रहेंगे।

क्या इसमें बिल्डर की कोई चाल है? क्या ग्राम सभा को यह प्रस्ताव मानना चाहिए? प्रस्ताव के अनुसार जंगल के कितने प्रतिशत पेड़ कटेंगे?

- मनीष जैन और मानस जैन

1 यदि हमें सुनाई देना बन्द हो जाए तो हमें किन-किन मुश्किलों का सामना करना पड़ सकता है?

2 तुमने देखा होगा कि कुछ ऐसे जीव हैं जो केवल बारिश के मौसम में ही दिखाई देते हैं जैसे केंचुए, गिंजाई आदि। बाकी के मौसम में ये जीव कहाँ चले जाते हैं और अपने रहने-खाने का प्रबन्ध कैसे करते हैं?

माप पाथी

3 इस L आकार के खेत को चार बराबर भागों में कैसे बाँटें?

बिना हाथ के पैर के, चल के ना तैर के
सबके घर में जाऊँ बिना किसी बैर के (चिट्ठी)

सोने को पलंग नहीं और ना ही महल बनाए
एक रुपैया पास नहीं फिर भी राजा कहलाए (शेर)

4 सारा किसी काम से शहर से बाहर गई थी। वह एक होटल में ठहरी हुई थी। देर रात किसी ने उसका दरवाज़ा खटखटाया। दरवाज़ा खोलने पर वह बोला, "माफ कीजिएगा मुझे लगा यह मेरा कमरा है।" उसके जाते ही सारा ने पुलिस को फोन किया। सारा ने ऐसा क्यों किया होगा? उसे उस व्यक्ति पर सन्देह क्यों हुआ?

फनी पाठशाला

इरफान

दोस्तो, पिछली बार हमारी-आपकी मुलाकात नहीं हुई। पता है क्यों? क्योंकि मैं भी तुम्हारी तरह छुट्टियाँ मनाने चला गया था। कैसी रहीं तुम्हारी छुट्टियाँ? घूमने के दौरान तुमको कई ऐसे दृश्य देखने को मिले होंगे, जिन्हें देखकर तुमको हँसी आ गई होगी या किसी दृश्य को देखकर मन में आया हो कि इसमें यह होता तो कितना फनी होता! यही तो एक कार्टूनिस्ट के दिमाग की फनी पाठशाला है, जो कभी बन्द नहीं होती। चलो, तुमको एक मज़ेदार कार्टून दिखता हूँ। इसमें खबर थी कि रेड लाइट पर भी ऑटो का मीटर चलता रहेगा। सोचो जहाँ 15-20 मिनट रेड लाइट पर ऑटो रुके रहते हों वहाँ क्या हालत होगी? सवारी का तो बैठे-बैठे ही कार्टून बन जाएगा! ऐसे ही तुम भी अपने शहर, स्कूल या घर, मोहल्ले की हालत पर बना डालो एक कार्टून। अगले अंक में तुम्हारे चुनिन्दा कार्टून को हम यहाँ छापेंगे और तुमसे बात भी करेंगे...फिर मिलते हैं....खूब पढ़िए...खूब कार्टून बनाइए...

1

1. ईशा, पाँचवीं, डी.पी.एस, कोयम्बटूर। 2. प्रसून जैन, बारहवीं, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल। 3. रुद्राक्ष भाएरे, सातवीं, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल। 4. चिराग, नवीं, डी.पी.एस पटना। 5. शिवम मिश्रा, दसवीं, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल। 6. जसकरन सिंह, चौथी, डी.पी.एस लुधियाना। 7. तान्या साहू, सातवीं, आनन्द विहार स्कूल, भोपाल।

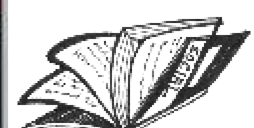

2

7

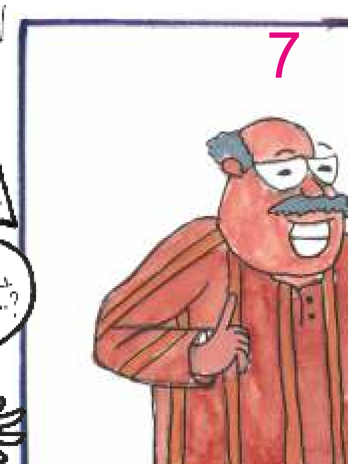

3

4

काला - सफ़ेद कुछ नहीं होता। हमें हर प्रकार के रंगभेद का विरोध करना चाहिए।

5

6

सड़कों पर ऐसी हरकतें हमें गुस्सा दिलाती हैं।

दादाजी! आज़ादी के पहले भी स्कूल थे?
हाँ
आपको भी सुबह उठकर स्कूल जाना होता था?
हाँ
आपको भी ढेर सारी भारी पढ़ाई करना पड़ती थी?
हाँ
मस्ती या शरारत करने पर आपको भी पनिशमेंट मिलती थी?
हाँ
तो फिर फर्क क्या पड़ा?
15 अगस्त के दिन हम लोग आज़ाद हुए थे।

गाँव म डाकू

म्हारा गाँव म आयो डाकू
नाम छो ऊको फाकम फाकू।
लम्बी-लम्बी ऊकी मूँछ
जस्या कुत्ता की हो पूँछ।
छोटी-छोटी ऊकी आँख्या
आँख्या न तो खागी माख्याँ
हाथ मा बंदूक छै तकड़ी
माथा पा राखै छै पगड़ी
ऊनै देख रामू चिल्लायो
भागो-भागो डाकू आयो।
रामू की आवाज छी ऊँची
ऊकी आवाज थाणा म पूछी
आवाज सुण सिपाही आयो
सब डाकून ने मजो चखायो।

हेमराज हल्दुनिया

शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला बोदल, राजस्थान

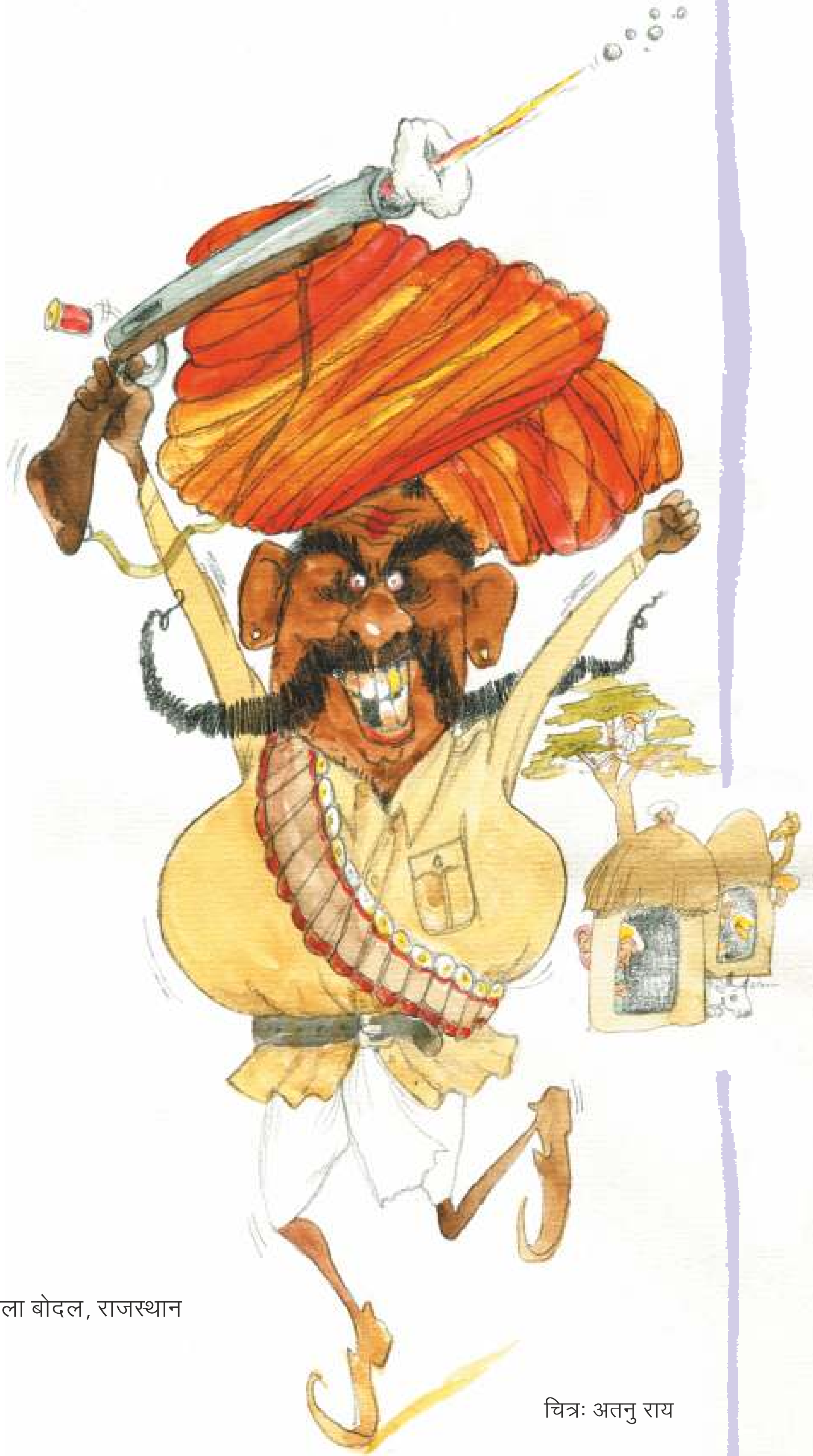

चित्रः अतनु राय

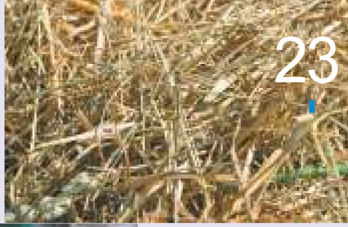

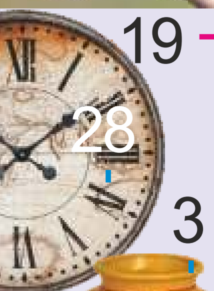

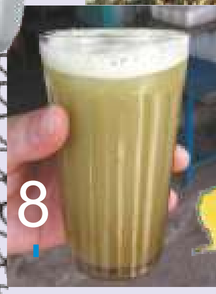

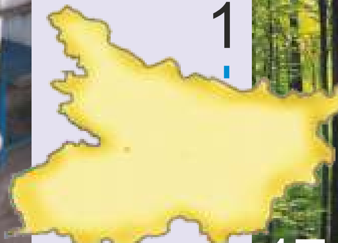

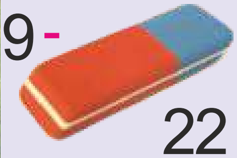

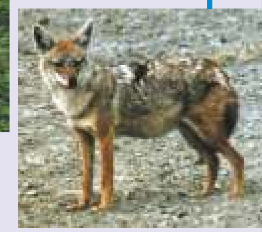

चित्र पहेली

- बाएँ से दाएँ · ऊपर से नीचे

1		2		3	4		5	
		6					7	8
9	10					11		
			12		13			
14					15		16	
			17	18			19	20
21	22	23		24	25			
	26		27				28	
29					30			

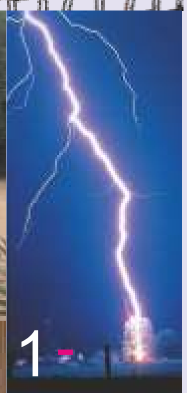

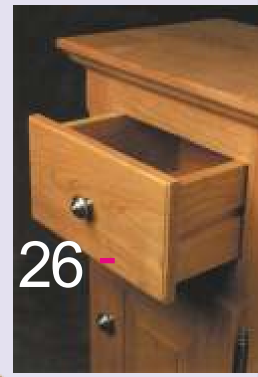

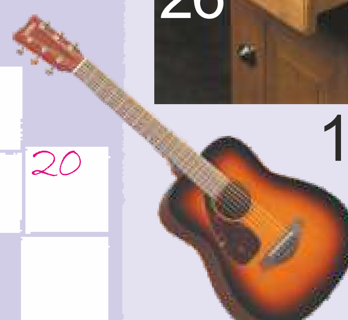

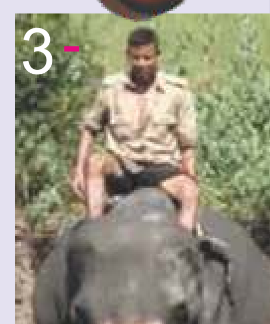

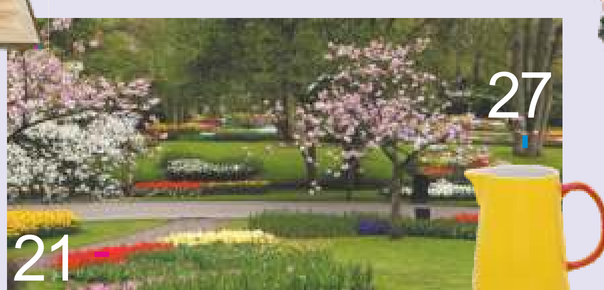

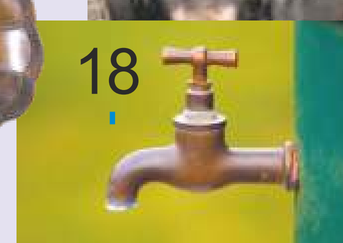

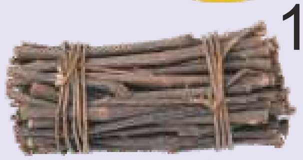

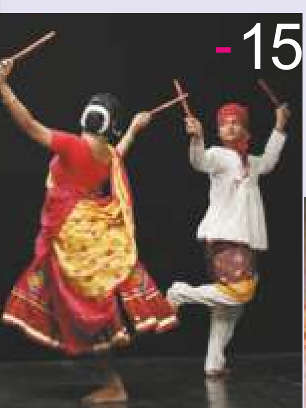

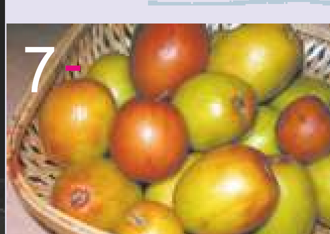

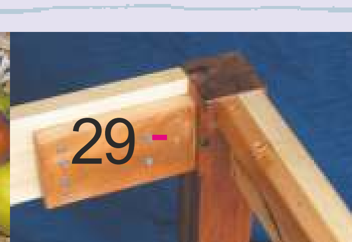

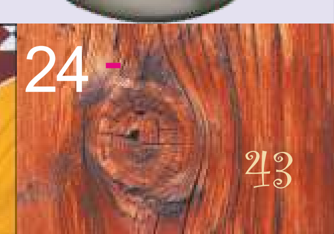

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म.प्र. / 261 / भोपाल / 2015-17

इक बिजली की नोंक लगी ऊनी बादल को
उधड़ के तागा-तागा बादल बरस गया...

- गुलज़ार

चित्र - रोहित गुप्ता, बारहवीं, राष्ट्रीय बाल भवन, नईदिल्ली।

प्रकाशक एवं मुद्रक अरविन्द सरदाना द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य, ई-10, शंकर नगर, 61/2 बस स्टॉप के पास, भोपाल 462016, म.प्र. से प्रकाशित एवं आर. के. सिक्युप्रिन्ट प्रा. लि. प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादकः सुशील शुक्ल